वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हिन्दू विश्व

नवम्बर (16-30), 2023

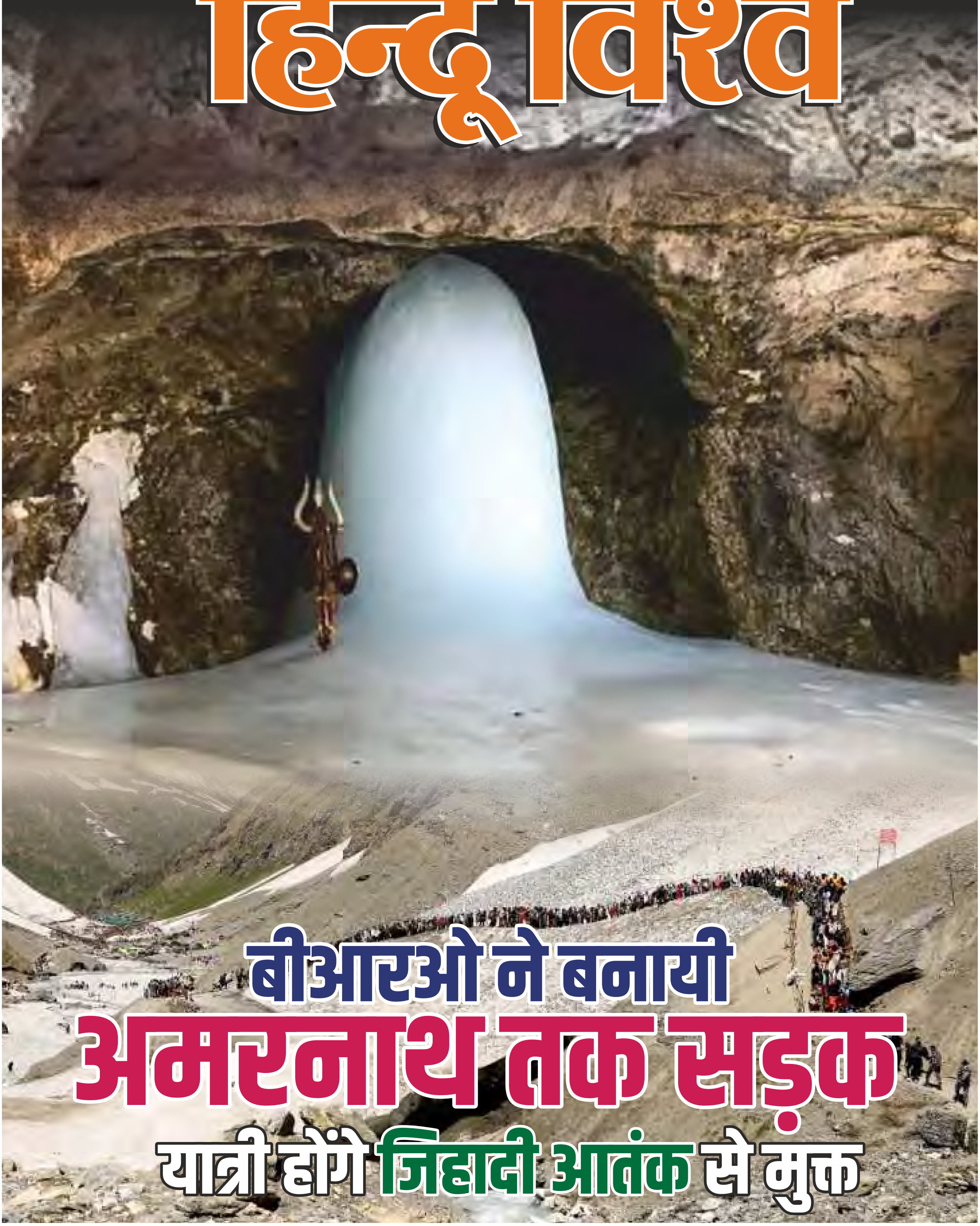

बीआरओ ने बनायी
अमरनाथ तक सड़क
यात्री होंगे जिहादी आतंक से मुक्त

झारखण्ड के राँची में भगवान वाल्मीकि प्रकट उत्सव पर कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप कार्याध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी

उडुपी पेजावर मठ के स्वामी विश्वप्रसन्नतीर्थ जी महाराज के आह्वान पर वेदव्यास गुरुकुलम में सन्त मंथन कार्यक्रम में पूज्य संतों के साथ उपस्थित विहिप कार्याध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी

मुरादाबाद-उत्तरप्रदेश में भगवान वाल्मीकि प्रकटोत्सव पर शोभायात्रा का शुभारंभ करते विहिप महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

राष्ट्रसंत पू. तुकड़ोजी महाराज की ५५वीं पुण्यतिथि पर मोझरी,
अमरावती में सभा को संबोधित करते विहिप महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

'झारखंड में हिंदू धार्मिक ट्रस्ट बोर्ड अधिनियम को समाप्त करने और हिंदू देवी-देवताओं के मंदिरों को राज्य के नियंत्रण से मुक्त करने हेतु महामहिम राज्यपाल से भेंट करते विहिप प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य'

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हे अग्निदेव ! आपको सर्वप्रथम उक्थ नामक यज्ञ (प्रशंसनीय यज्ञ) में स्थापित किया जाता है। यज्ञस्थल में सोम कूटने के पत्थर एवं आसन स्थापित किये जाते हैं, इसलिए हे मरुतों ! हे ब्रह्मणस्पते! हे देव! वेद मंत्रों के द्वारा आपसे हम श्रेष्ठ रक्षण की कामना करते हैं।

– सामवेद

नवम्बर 16-30, (2023)
कार्तिक शुक्ल - मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
नल संवत्सर
वि. सं. - 2080, युगाब्द- 5125

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा, धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार, रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए वार्षिक डाक व्यय सहित	$ 75 USD
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

@eHinduVishwa
@eHinduVishwa
@eHinduVishwa
कुल पेज - 28

05 बीआरओ ने बनाया अमरनाथ गुफा तक सड़क

हमास का समर्थन : देश के लिए खतरे की घंटी है	08
भारत में भी तैयार है गाजापट्टी जैसा उन्माद फटने को	10
हमास-इजराइल संघर्ष पर भारतीय दलों की विकृत राजनीति	12
धर्म रक्षा ही राष्ट्र रक्षा है	15
चार दशक तक लड़ी राम मंदिर की लड़ाई	17
भारतीय रसोई परंपराओं में हल्दी और औषधीय लाभों के पीछे का विज्ञान	20
जामुन के अंग-अंग में औषधि है	22
श्री आलोक कुमार की उपस्थिति में मनाई गई महर्षि बाल्मिकी जयंती	23
हरिद्वार उत्तराखण्ड में वात्सल्य वाटिका का रजत जयंती समारोह	24
वाल्मीकि जयंती पर समरसता गोष्ठी	25
माँ शबरी रामलीला महोत्सव ऋषिकेश में विहिप कार्याध्यक्ष आलोक कुमार	26

सुभाषित

हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः, शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः।
शरीरभाजां भवदीयदर्शनं, व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्।।

आपका दर्शन शरीरधारियों की त्रैकालिक पवित्रता सूचित करता है, क्योंकि यह वर्तमान के पापों को नष्ट करता है, भविष्य के मंगल का कारण बनता है एवं भूत के शुभ कर्मों से प्राप्त होता है।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

बीआरओ नें बनाई अमरनाथ तक सड़क अब होगी यात्रा जिहाद मुक्त

अमरनाथ यात्रा पर विगत कालखंड में अनेक आतंकी हमले हुए हैं, आतंकी हमलों के कारण यह यात्रा पर संगट भी आया। बजरंग दल के पुरुषार्थ से यात्रा अनवरत जारी रही। यात्रा का मार्ग दुर्गम व कठिन होने के कारण अनेक यात्री खच्चरों से यात्रा करते थे। खच्चर लेकर यात्री ढोने वाले सभी मुसलमान थे, यात्रा के साधनों पर एकाधिकार होने से, ये लोग आये दिन अपनी जिहादी मानसिकता से उपद्रव करते रहते थे, यात्री जिहाद का शिकार होते थे, यात्रियों के लिए सेवा कार्य करने वालों और भंडारा चलाने वालों पर भी हमले होते थे, यात्रियों पर खतरे की आशंका हमेशा रहती थी। अब सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) ने बालटाल मार्ग की ओर से अमरनाथ गुफा तक वाहनों की आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए सड़क चौड़ीकरण का कार्य पूर्ण कर लिया है और सोमवार (6 नवम्बर 2023) को वाहनों का पहला जत्था गुफा तक सफलतापूर्वक पहुँचा दिया है। सीमा सड़क संगठन, इस उपलब्धि के लिए बधाई का पात्र है। अब यात्री सहजता से बाबा की गुफा तक यात्रा कर सकेंगे, दर्शन—साधना कर पायेंगे।

कभी द्वारका से भेंट द्वारका की यात्रा करने वाले यात्रियों के साथ भी कुछ ऐसा ही अन्याय होता था। वहाँ नाव चलाने वाले सभी नाविक मुसलमान होते थे, एकाधिकार होने के कारण मनमाना किराया वसूलते थे, इस अत्यधिक वसूली के कारण यात्रियों की सँख्या घटने लगी थी। किन्तु, ओखा से द्वारका तक केबल आधारित सिग्नेचर ब्रिज अब अपने निर्माण के अंतिम चरण में है। यह पुल जमीन और समंदर से होकर 4472 मीटर का है। समंदर में कुल 2320 मीटर और जमीन पर 2152 मीटर है। इसके बन जाने से हिंदू तीर्थ यात्रियों से होने वाली जबरन वसूली बंद हो जाएगी, यात्रा आसान हो जाएगी और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

रामेश्वरम और विवेकानंद शिला स्मारक के बीच आवागमन के साधनों पर कभी इनका ही कब्जा था। केवल आवागमन के साधन ही नहीं, मंदिरों और तीर्थों के आसपास के बाजार पर भी देशभर में मुसलमानों ने बड़ा कब्जा कर लिया है, बड़ी मात्रा में दुकान और व्यावसायिक प्रतिष्ठान खड़ा कर लिए हैं। मंदिरों और तीर्थों की भारत में बहुत बड़ी अर्थव्यवस्था है, इसके दोहन के लालच में मुसलमान, बुतपरस्त कहकर जिन काफिरों से नफरत करता है, उनके बुतों वाले मंदिरों—तिर्थों के पास काबिज होकर धन कमाने में नहीं हिचकता है, अन्यथा पैठ बढ़ जाने पर उसी तीर्थ में हिंदुओं के आवागमन और यात्रा में जिहादी विघ्न भी करने लग जाता है। तमिलनाडु में तिरुनेलवेली जिले में अत्री हिल्स पर स्थित अनुसूया देवी संवेद अत्री परमेश्वर मंदिर की भूमि पर मुसलमानों द्वारा कब्जा कर लेने और दुकान खोल लेने के प्रयत्न उच्च न्यायालय के दखल से रुके थे। इसी जिले के चोकातम थोपु में प्रसिद्ध नेलयापार मंदिर नहर के तट पर स्थित त्रिशूल अंकित चट्टान को हटाने का प्रयास मुसलमानों ने किया था। थिरुपरानकुन्दरम, मदुरै में हिन्दू देवी को हटाकर पहाड़ की चोटी पर मस्जिद बना लिया था। पुडुकोट्टई जिले में चोल काल की सभी मूर्तियों के सिर तोड़ दिए गए थे। रानिपेट जिले के अम्मा मंदिर की मूर्तियों की चोरी और ऐतिहासिक पंच लिंगेश्वर मंदिर के विग्रहों पर विर्य स्खलन करने की शर्मनाक घटना हुई थी। ऐसी घटनाएँ आज भी देशभर में हो रही हैं।

अनेक मंदिरों पर कब्जा और तोड़—फोड़ की घटनाएँ जिहादी सदियों से करते आ रहे हैं। अयोध्या—मथुरा—काशी और सोमनाथ के मंदिरों पर जिहादी आक्रमण तो जगत प्रसिद्ध है, इसके साथ लाखों अन्य मंदिर तोड़े गए, लुटे गए, किन्तु जब कमाने का लालच और मौका दिखा, तो बाजार और दुकानों का कब्जा भी कर लेते हैं, यात्रा के साधनों पर कब्जा कर लेते हैं। इनकी चाह होती है कि विकास न हो, जिससे इनकी पैठ और कब्जा बनी रहे। ये यात्रियों को और यात्रा को लाचारी के माहौल में फंसाकर कमाने की जुगत बनाये रखना चाहते हैं। इसी मानसिकता से पीडीपी ने बीआरओ द्वारा बनाये गए, इस सड़क का विरोध करना शुरु किया है। इस विरोध में पीडीपी हिंदूओं की पक्षधर होने का स्वांग रच रही है, जबकि वो आरम्भ से ही आतंक समर्थक व हिंदू विरोधी रही है। उसे यात्रा या यात्रियों की चिंता नहीं है, यात्रा के संसाधनों से जिहादियों का कब्जा छुट जाने और उनके बर्चस्व वाला रोजगार छिन जाने की चिंता है। पीडीपी नहीं चाहती कि जम्मू—कश्मीर का विकास हो। इनकी इच्छा है कि आतंकवादियों की धाक वहाँ बनी रहे और हिंदू प्रभाव घटे। तीर्थ यात्रा हिंदू प्रभाव का एक सशक्त माध्यम है। जब जनरल जगमोहन ने वैष्णव देवी तीर्थ का विकास करवाया था, तब भी ये विरोध कर रहे थे, लेकिन जगमोहन की सख्ती के सामने इनकी एक न चली। आज भी जम्मू—कश्मीर की सरकार, सेना और केन्द्र सरकार के सटीक और सधे कदमों के आगे इनकी नहीं चल पा रही है, इसीलिए जिहाद को प्रश्रय देने की इनकी बौखलाहट में ये कुछ भी बोल रहे हैं। अभी समय है, जब कश्मीर के दल, अपनी राजनीतिक दिशा बदल लें, अन्यथा इनका अस्तित्व भी नहीं बचेगा, आने वाले समय में।

अनेक मंदिरों पर कब्जा और तोड़-फोड़ की घटनाएँ जिहादी सदियों से करते आ रहे हैं। अयोध्या-मथुरा-काशी और सोमनाथ के मंदिरों पर जिहादी आक्रमण तो जगत प्रसिद्ध है, इसके साथ लाखों अन्य मंदिर तोड़े गए, लुटे गए, किन्तु जब कमाने का लालच और मौका दिखा, तो बाजार और दुकानों का कब्जा भी कर लेते हैं, यात्रा के साधनों पर कब्जा कर लेते हैं। इनकी चाह होती है कि विकास न हो, जिससे इनकी पैठ और कब्जा बनी रहे।

बीआरओ ने बनाया अमरनाथ गुफा तक सड़क

यात्री कार से सीधा गुफा की द्वार तक जा सकेंगे

मुरारी शरण शुक्ल
(सह सम्पादक हिन्दू विश्व)

कालों (रोग–मृत्यु–दुर्घटना) के देवता महाकाल हैं, शक्तिवर्धन करने वाले देवता सोमनाथ हैं, आरोग्य प्रदान करने वाले देवता वैद्यनाथ हैं, श्वास को सिद्ध करने वाले देवता ओंकारेश्वर हैं, तो अमरता का निश्चय कर देने वाले देवता बाबा अमरनाथ हैं। अमरता जीवन के उत्तरार्ध (बुढ़ापा) का विषय होने से इनको बुढ़ा अमरनाथ भी कहा जाता है। यहाँ शिवलिंग बर्फ से स्वयं ही बनता है, तो इसीलिए इनको बाबा बर्फानी भी कहते हैं। बर्फ दुनियाँ के बहुत स्थानों पर होता है, भारत में भी बर्फ वाले अनेक स्थान हैं, किन्तु बर्फ से अपने आप और प्रतिवर्ष शिवलिंग बनता है, केवल एक ही स्थान पर और वह स्थान बाबा अमरनाथ का पावन स्थल है। यह जम्मू–कश्मीर राज्य के अनंतनाग जिले के पहलगाम तहसील में स्थित है। इस जिले में 97.99 प्रतिशत मुसलमान हैं, हिन्दू जनसँख्या मात्र 1.22 प्रतिशत है। पहलगाम तहसील में मुसलमान 80.09 प्रतिशत है, जबकि हिन्दू 17.64 प्रतिशत है। मुस्लिम जनसँख्या अधिक होने से यहाँ होने वाली यात्रा पर मुसलमानों का अत्यधिक प्रभाव रहता है। सेना और अर्द्धसैनिक बलों की सुरक्षा में ही यह यात्रा हो पाती है। मजबूत सुरक्षा के पश्चात भी आतंकवादी आये दिन इस यात्रा पर हमले करते रहते हैं।

अमरनाथ यात्रा मार्ग

यात्रा का मार्ग अत्यंत दुर्गम और संकरा है। पतले पहाड़ी मार्ग पर पैदल ही यात्रा करना पड़ता है। अमरनाथ तक जाने के दो मार्ग हैं, एक पहलगाम से और दूसरा बालटाल से। श्रीनगर से पहलगाम लगभग 92 किलोमीटर और बालटाल लगभग 93 किलोमीटर दूर है। इन दोनों स्थानों तक पहुँचने के लिए सार्वजनिक साधन उपलब्ध हैं, इसके आगे वाहनों के आवागमन का मार्ग न होने से पैदल ही जाना पड़ता था। पहलगाम से अमरनाथ की पवित्र गुफा की दूरी लगभग 48 किलोमीटर और बालटाल से लगभग 14 किलोमीटर है।

बालटाल मार्ग – अमरनाथ गुफा तक बालटाल से कम समय में पहुँच सकते हैं। यह छोटा मार्ग है। बालटाल से अमरनाथ गुफा की दूरी लगभग 14 किलोमीटर है, किन्तु यह मार्ग बहुत कठिन और सीधी चढ़ाई वाला है, इसलिए इस मार्ग से अधिक वृद्ध और बीमार नहीं जाते हैं।

पहलगाम मार्ग – पहलगाम मार्ग अमरनाथ यात्रा का सबसे पुराना और ऐतिहासिक मार्ग है। इस मार्ग से गुफा तक पहुँचने में लगभग 3 दिन लगते हैं। किन्तु यह अधिक कठिन नहीं है। पहलगाम से पहला पड़ाव चंदनबाड़ी का आता है, जो पहलगाम बेस कैंप से करीब 16 किलोमीटर दूर है। यहाँ तक मार्ग लगभग सपाट होता है, इसके बाद चढ़ाई शुरू होती है। इससे अगला पड़ाव 3 किलोमीटर आगे पिस्सू टॉप है। तीसरा पड़ाव शेषनाग है, जो पिस्सू टॉप से लगभग 9 किलोमीटर दूर है। शेषनाग के बाद अगला पड़ाव पंचतरणी का आता है, जो शेषनाग से 14 किलोमीटर दूर है। पंचतरणी से पवित्र गुफा केवल 6 किलोमीटर दूर रह जाती है।

यात्रा में भूस्खलन और बादल फटने के खतरे

इस वर्ष की यात्रा में रामबन में भूस्खलन हुआ था। 1969 में बादल फटने से 40 यात्रियों की मृत्यु हो गई थी। 1996 में 250 यात्रियों की जान चली गई थी। भूस्खलन के लिए चिन्हित स्थलों और क्षेत्रों में सेना राहत, भंडारा और सेवा के शिविरों के टेंट नहीं लगाने देती, क्योंकि इससे दुर्घटना होने की स्थिति में हताहतों की सँख्या बढ़ जाने का खतरा रहता है। मार्ग में भौगोलिक चुनौतियों के साथ–साथ प्राकृतिक आपदाओं का खतरा भी सदा रहता है। इस कठिनाई वाले मार्ग को सुगम बनाने के लिए यात्री कुछ साधन–सुविधा ढूंढ़ते हैं। किन्तु वहाँ खच्चर लिए मुसलमान ही मिलते हैं और वह भी मनमानी कीमत पर, उसके उपर जिहाद प्रेरित बदतमीजियों का भी सामना करना पड़ता है।

पहला आतंकी हमला

वर्ष 1993 में अमरनाथ यात्रा पर पहला आतंकी हमला हुआ, जिसके चलते दर्शनार्थियों की सँख्या कम रहती थी। वर्ष 1993 में यात्रा पर पहला आतंकी हमला हुआ, लेकिन आगामी वर्षों में स्थिति बेहतर होने पर 1996 में रिकॉर्ड सँख्या में श्रद्धालु यात्रा में शामिल हुए थे। संसद में प्रश्न का उत्तर देते हुए 2017 में गृह राज्य मंत्री हंसराज अहीर ने बताया था कि अमरनाथ यात्रा पर विगत 27 वर्षों में (1990 से 2017 तक) 36 आतंकी हमले हुए हैं। आतंकी आक्रमणों के कारण यह यात्रा बाधित होने का खतरा उत्पन्न हुआ था, जिसे बजरंग दल ने अपने शौर्य के प्रताप से जारी रखा। आतंकियों ने यात्रा रोकने की धमकी दी थी, तब बजरंगियों ने चुनौती स्विकार किया और यात्रा पर यह संकट नहीं आ पाया।

बीआरओ ने बालटाल मार्ग का किया चौड़ीकरण

सीमा सड़क संगठन (BRO) ने अमरनाथ यात्रियों को एक बड़ा उपहार दिया है। श्रद्धालु अब सीधा गुफा तक वाहन से पहुँच सकेंगे। गांदेरबल जिले में डुमेल से बालटाल आधार शिविर के रास्ते अमरनाथ गुफा तक सड़क का चौड़ीकरण का काम पूरा हो गया है। सोमवार को यहाँ पहली बार अमरनाथ गुफा तक वाहन पहुँच गए। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। इतनी ऊँचाई पर सड़क का विस्तार करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था, लेकिन बीआरओ ने यह काम कर के दिखाया है।

'प्रोजेक्ट बीकन' के अंतर्गत पूरा हुआ कार्य

बीआरओ को पिछले साल गुफा मंदिर तक जाने वाले दोहरे मार्गों का रख–रखाव करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। बीआरओ के 'प्रोजेक्ट बीकन' में अमरनाथ यात्रा मार्ग की बहाली और सुधार का काम शामिल है। बीआरओ ने अपने एक ट्वीट में कहा कि बॉर्डर रोड के कर्मियों ने इस कठिन लक्ष्य को पूरा करते हुए इतिहास बनाया। पवित्र गुफा तक वाहनों का पहला काफिला पहुँच गया है।

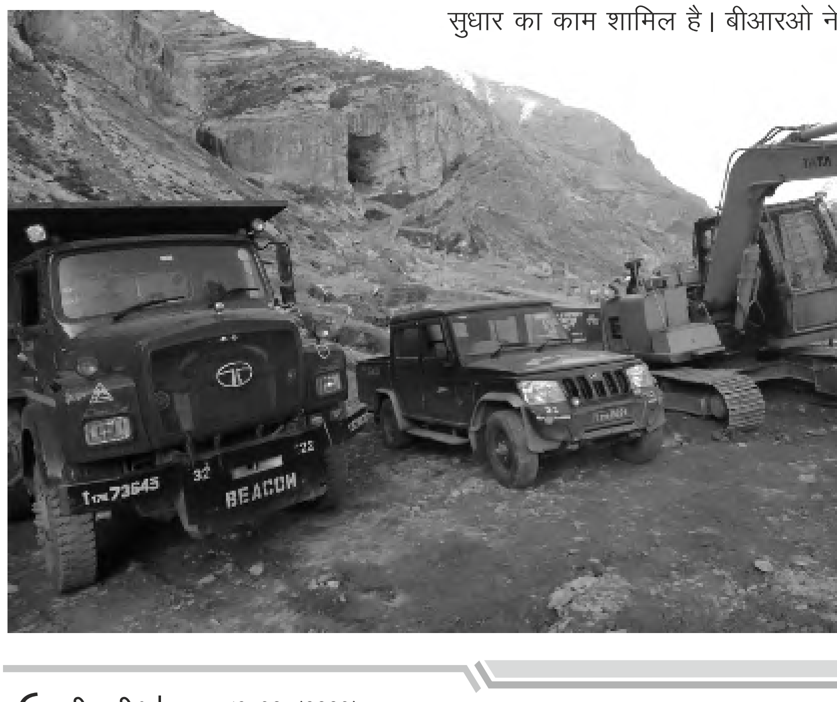

पैदल एवं खच्चर से गुफा तक आते थे श्रद्धालु

इसके पहले जम्मू कश्मीर सरकार का पीडब्ल्यूडी विभाग इस सड़क मार्ग की देखरेख एवं रखरखाव कर रहा था। जबकि अनंतनाग जिले में पहलगाम मार्ग की देखरेख पहलगाम विकास प्राधिकरण के जिम्मे था। गत सितंबर महीने में यूटी प्रशासन ने सड़क के विस्तारीकरण का कार्य बीआरओ को सौंप दिया था। अभी तक श्रद्धालु अमरनाथ गुफा तक की दूरी पैदल या खच्चर से तय करते आए हैं। इस मार्ग में उन्हें कई प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था।

अब छह से नौ घंटे में पूरी होगी यात्रा

बीआरओ के अधिकारियों का कहना है कि बर्फीली वादियों में स्थित 13 किलोमीटर लंबे इस सड़क मार्ग को 12 से 14 फीट तक चौड़ा किया गया है। अब बालटाल से पवित्र गुफा तक की यात्रा छः से नौ घंटे में पूरी हो जाएगी। पर्याप्त क्षमता की पार्किंग भी साथ में बनाया है बीआरओ ने।

पीडीपी का विरोध

यद्यपि बीआरओ की यह उपलब्धि पीडीपी को रास नहीं आई है। पीडीपी के प्रवक्ता मोहित भान ने एक्स पर कहा कि 'यह उपलब्धि नहीं हिंदूत्व एवं उसकी आस्था पर एक हमला है। हिंदू धर्म आध्यात्मिक प्रकृति में डूबने के बारे में है, इसलिए हमारी तीर्थयात्राएँ हिमालय की गोद में हैं। केवल राजनीतिक लाभ के लिए धार्मिक तीर्थ स्थलों को पिकनिक स्थलों में बदलना निंदनीय है। हमने जोशीमठ, केदारनाथ में ईश्वर का प्रकोप देखा है और फिर भी हम कोई सबक नहीं सीख रहे हैं, बल्कि कश्मीर में तबाही को आमंत्रित कर रहे हैं।

भाजपा का पलटवार

भाजपा की जम्मू–कश्मीर इकाई ने आलोचनाओं पर पलटवार करते हुए कहा कि लोग समझदार हैं। धोखे की

राजनीति का शिकार नहीं होंगे। बीजेपी ने एक्स पर पोस्ट में कहा, 'पीडीपी विरोध करके और सड़क निर्माण में खामियाँ निकालकर 2008 के भूमि विवाद को दोहराने की कोशिश कर रही है, लेकिन लोग काफी समझदार हैं और फिर से धोखे की राजनीति का शिकार नहीं होंगे।' पूर्व उपमुख्यमंत्री और बीजेपी नेता कविंदर गुप्ता ने बालटाल मार्ग की ओर गुफा तक वाहनों की आवाजाही की व्यवस्था करने का विरोध करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की। उन्होंने कहा कि जो लोग मानसिक बीमारी से पीड़ित हैं, वही लोग बाबा बर्फानी के पवित्र गुफा तक सड़क बनने का विरोध कर रहे हैं। ऐसे लोग अपना दिमागी इलाज कराएँ।

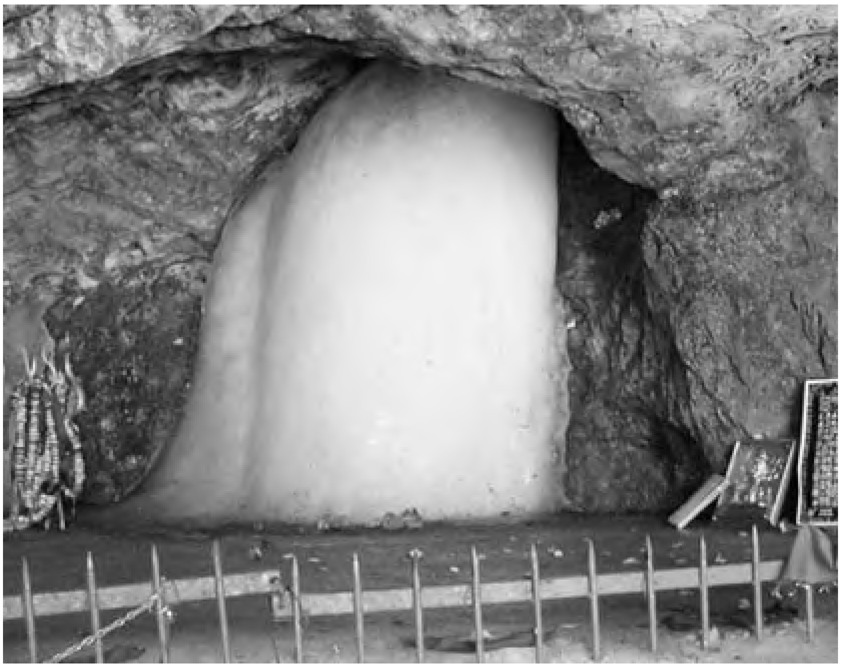

तीर्थों तक सड़क निर्माण पहले भी हुए

कोलकाता की रानी रासेश्वरी (मछुआरे जाती की थी यह धर्मात्मा रानी) ने ब्रिटिश काल में दक्षिणेश्वर काली मंदिर बनवाया था और समंदर के किनारे –किनारे कोलकाता से रामेश्वरम तक सड़क बनवाया था। रामेश्वरम से श्रीलंका के बीच नाव सेवा भी उन्होंने आरम्भ करवाया था। भगवान श्रीराम पैदल वन गए थे, किन्तु लंका से अयोध्या लौटे थे पुष्पक विमान से। ऋग्वेद में भी सूर्य की रश्मियों की भांति सीधी रेखा में बने राजमार्गों का विवरण उपलब्ध है। पवित्र देशाटन को पर्यटन कहा है शास्त्रों ने। यहाँ सबको तीर्थ पर्यटन अनिवार्य रुप से करने का आदेश शास्त्र करते हैं। मोक्ष के लिए यह तीर्थाटन अनिवार्य माना गया है। अतः पर्यटन और तीर्थ यात्रा के निमित्त बने सड़कों और यातायात सुविधाओं का विरोध बौद्धिक दिवालियेपन की निशानी है। राजनेताओं को इससे बचना चाहिए। भारत की जनता अपने तीर्थों और उससे जुड़ी मान्यताओं और सुविधाओं का विरोध सहन नहीं करती है और यह अब उसके मतदान के चलन में दिखने लग गया है।

माननीय रंगाहरि जी नहीं रहे

माननीय रंगाहरी जी 29 अक्टूबर को प्रातः 7.45 बजे मोक्षपद को प्राप्त हुए। उनका पार्थिव शरीर प्रातः 11 बजे एर्नाकुलम स्थित संघ कार्यालय माधव निवास पहुंचा। इसके बाद 30 अक्टूबर को सुबह 6 बजे 'तानाल' के निराश्रित बालकों के छात्रावास, ओट्टाप्पालेम, पलक्कड़ ले जाया गया। दाह संस्कार 'भरतफुला' नदी के तट पर इवरमठ के परिसर में हुआ। आपने दशकों तक केरल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यों के विस्तार के लिए काम किया। केरल प्रांत के प्रचारक के रूप में काम किया और बाद में कई वर्षों तक अखिल भारतीय सह बौद्धिक प्रमुख और अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख के रूप में काम किया। 'लोकमंथन' जैसे मंचों के माध्यम से हमारे देश के लोगों की मानसिकता को देशभक्ति की ओर मोड़ने के लिए हिंदुत्व को देश के प्रचार तंत्र का केंद्र बिंदु बनाने का उनका प्रयास सफल रहा।

हम सभी उनकी अद्वितीय प्रतिभा से आश्चर्यचकित हैं, जिस तरह से वे किसी समस्या का सामना करते थे और समाधान निकालते थे, 'मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि श्रीरंगहरि जी की आत्मा को सद्गति मिले। मैं उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।'

– केशवराजु आकारपु

युवराज पल्लव

हमास का समर्थन देश के लिए खतरे की घंटी है

बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना' इस कहावत को दुष्टता के स्तर तक चरितार्थ करते घूम रहे थे एएमयू (अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी) के वामपंथी– मुस्लिम विद्यार्थी। उन्होंने फिलस्तीनी आतंकी संगठन हमास की क्रूरता के समर्थन में आतंकी नारों और मजहबी क्रूरता के नारों से पूरे परिसर को दहला दिया। इससे गैर इस्लामी छात्रों के बीच जबरदस्त भय का माहौल बन गया था। लेकिन क्या यह पहली बार है? नहीं ! याद कीजिए कश्मीर में धारा 370 हटाने से पूर्व कश्मीरी मुस्लिम आतंकियों के समर्थन में भी इसी प्रकार के नारे लगाए जाते थे। संसद पर हमला करने वाले अफजल गुरु की फांसी को 'न्यायिक हत्या' कह, हिंदुओं और सैनिकों के हत्यारे आतंकी बुरहान बानी के वध को किस प्रकार गौरवान्वित किया गया। कैसे असँख्य भीड़ इन जिहादी आतंकियों के जनाजे में शामिल हो कर समाज और कानून व्यवस्था को मुँह चिढ़ाती रही है, वह किसी से छुपा नहीं है। यह स्पष्ट संदेश है 'इस्लामी उम्मा' का, जिसके अनुसार किसी मुस्लिम व्यक्ति अथवा इस्लामी दलील का समर्थन हर कीमत पर किया जाना, हर मुस्लिम के लिए फर्ज है। फिर चाहे वह कितना ही अनैतिक, अमानवीय, असभ्य ही क्यों न हो।

याद रखिए, यह वही विश्वविद्यालय है, जिसमें भारत को विभाजित करने वाले योजनाकार, हिंदू मुस्लिम खाई को बढ़ा कर राजनीति करने वाले, विभाजन के समय लाखों हिंदुओं की हत्याएँ, बच्चियों–महिलाओं के साथ बलात्कार की 'सीधी कार्यवाही' को प्रेरित करने वाले मुहम्मद अली जिन्ना को ससम्मान याद किया जाता है और जब कोई इसका विरोध करता है, तो एएमयू प्रशासन जिन्ना के पूर्व छात्र होने का कारण बता, इससे अपना पल्ला झाड़ लेता है। प्रश्न है कि एएमयू ऐसा क्यों करता दिखता है? जिन्ना करोड़ों मुस्लिमों के लिए आदर्श है, प्रेरणा का पात्र है। इसलिए वह बिना किसी ऐसी घोषित नीति के अपने मजहबी सिद्धांत को प्रतिपादित करने में सहायक बातों या लोगों को संरक्षण देता है। लगता है, ऐसे विश्वविद्यालयों द्वारा ऐसा करना एक मजहबी संदेश है।

अधिक वर्ष नहीं बीते हैं, जब इन्हीं इस्लामिक यूनिवर्सिटी में पड़ोसी इस्लामी देशों के अल्पसँख्यकों को संरक्षण देने वाले सीएए, एनआरसी के विरोध में 'तेरा मेरा रिश्ता क्या..' जैसे विभाजक नारे अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर लगाए गए। और लगाने वालों में अधिकांश भारत के सबसे बड़े अल्पसँख्यक मुस्लिम समाज के लोग थे। लेकिन ये इन्हीं देशों से आने वाले बहुसँख्यक मुस्लिमों के लिए देश के हर संसाधनों पर अधिकार चाहते हैं। उनके रिश्ते–नातेदार बनकर उनकी पैरवी करते हैं।

ऐसे में उस मानसिकता को समझना बहुत आवश्यक है, जो इस प्रकार के विभाजक, उद्धेलक, जिहादी नारे और व्यवहार करने को प्रेरित करती है। यदि समय रहते इन पर नियंत्रण कर इन्हें कुचला नहीं गया, तो संविधान को ताकत देने वाले 'हम भारत के लोग..' ही बहुत बड़े खतरे में पड़ जायेंगे। हमारा संविधान लोगों को बिना शस्त्रों के एकत्रित होने का अधिकार देता है। लेकिन यह कहाँ की नैतिकता है, संवैधानिकता है, कि इस शांति से एकत्रित होने के नाम पर अशांति, आतंकवाद फैलाने वालों के समर्थन में रैलियाँ, गोष्ठियाँ, कार्यक्रम किए जाएँ? ऐसे में तो हम जानबूझ कर उन विध्वंसक शक्तियों को सक्रियता का अधिकार दे रहे हैं, जो हमारे, हमारे राष्ट्र

और हमारी सँस्कृति–सभ्यता को नष्ट करने के मजहबी उन्माद से भरे हुए हैं। जिनके लिए किसी अन्य ईश्वर, अल्लाह का अस्तित्व ही ना काबिल–ए–बर्दाश्त है। फिर विविधता में एकता, आपसी भाईचारे, शांतिप्रियता, मानवीयता के लिए कोई स्थान ही कहाँ बचता है?

भारतीयों को विशेषकर हिंदुओं और सेक्युलर लोगों को यह हमेशा याद रखना चाहिए कि मुस्लिम तुष्टिकरण या हिंदू मुस्लिम भाईचारे को प्रस्थापित करने की धुन में गाँधी जी ने जिस 'खिलाफत' के समर्थन में रैलियाँ की थीं, वह इस्लामिक भाईचारे की बात तो करता है, लेकिन अंबेडकर के शब्दों में वह 'सिर्फ मुस्लिम भाईचारे तक सीमित' है। गैर मुस्लिमों को वह काफिर मानता है। यही कारण है गाँधी की तमाम कोशिशों के बावजूद इस्लाम के नाम पर भारत का विभाजन हुआ और गाँधी जो अपनी लाश पर पाकिस्तान बनेगा का दावा करते थे, को अपने जिंदा रहते हुए पाकिस्तान बनना स्वीकारना पड़ा। साथ ही उसे मजबूत करने हेतु उन्होंने आर्थिक सहायता का दबाव भी हिंदुस्तान की सरकार पर बनाया था।

वर्तमान में फिलिस्तीन के नाम पर हमास का समर्थन करने वाले गैर–मुस्लिम जाने–अनजाने ही गाँधी वाली गलती को दोहरा रहे हैं। इससे वे इस्लामी उम्मा का कट्टर सिद्धांत मजबूत कर रहे हैं। यही कारण है हम भारत में यदाकदा 'तेरा मेरा रिश्ता क्या..', 'हिंदुओं की कब्र खुदेगी...' जैसे विभाजनकारी, नस्लीय, मजहबी उन्मादी और भय पैदा करने वाले नारे सुनते रहते हैं। किसी दूर देश से संबंधित इस्लामी विषयों पर भारत में रैली, विरोध प्रदर्शन, तोड़–फोड़, यहाँ तक कि हिंसक दंगों के कारण 'सेक्युलर उत्पीड़न' का शिकार हैं। याद कीजिए मुंबई में आजाद मैदान में हुई इस्लामी रैली और उसके बाद के दंगे। जिसमें हर भारतीय के लिए गौरवशाली प्रेरणा के प्रतीक 'अमर जवान ज्योति' को लात मार कर तोड़ दिया गया था। क्या उनका भारत से किसी भी प्रकार का कोई लेना–देना था? नहीं। यह रैली म्यांमार में मुस्लिमों की हिंसा, अत्याचार के खिलाफ बेहद शांति प्रिय अहिंसक बौद्धों के प्रतिकार के विरोध में शांति के नाम पर आयोजित की गई थी।

इतना सब कुछ होने, देखने के बावजूद भारत के कथित बुद्धिजीवी, वामपंथी, इस्लामी विद्वान इजरायल पर हमला, बहु–बेटियों को बंधक बना उनका वहशियाना बलात्कार करने, हत्याएँ करने वाले फिलिस्तीनी हमास के साथ खड़ा है। ये कितने वहशी हैं, इसका अंदाजा लगाइए कि एक बंधक जिसे इजराइली फौज ने छुड़ा लिया ने बताया कि इस्लामी आतंकी हमास के लोगों ने तीन दिन से भूखी उस महिला को खाने में मीट की जो सब्जी दी थी, वह उस माँ के खाने के बाद उसे बताते हैं कि यह उसके एक साल के बेटे के मांस से बनी सब्जी थी, जिसे उन इस्लामी लोगों ने उससे छीना था। क्या गुजरा होगा इस माँ के दिल पर? जरा सोचिए। क्या यह सब इन लोगों की शैतानी, वहशी जहेनियत को नहीं बताती? क्या ऐसे लोगों को हम अपने घर–परिवार, पड़ोस में रखना चाहेंगे? इसकी क्या गारंटी है कि ये लोग मौका मिलने पर हमारे साथ भी वही सब नहीं करेंगे, जिसका ये समर्थन कर रहे हैं? ध्यान रहे, हमारे विचार ही हमारे व्यवहार को प्रेरित करते हैं।

ये कितने वहशी हैं, इसका अंदाजा लगाइए कि एक बंधक, जिसे इजराइली फौज ने छुड़ा लिया ने बताया कि इस्लामी आतंकी हमास के लोगों ने तीन दिन से भूखी उस महिला को खाने में मीट की जो सब्जी दी थी, वह उस माँ के खाने के बाद उसे बताते हैं कि यह उसके एक साल के बेटे के मांस से बनी सब्जी थी, जिसे उन इस्लामी लोगों ने उससे छीना था।

एक बड़ा तथ्य जो हमास का समर्थन करने वाले गलत बताते हैं, वह यह कि जिस फिलस्तीन को ये लोग पीड़ित बता रहे हैं, दरअसल वह ही इजरायल और यहूदियों पर कब्जा, और प्रताड़ना करने वाले हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से इजराइल यहूदी देश रहा है। लेकिन इस्लाम के आक्रमण के बाद इजरायल के यहूदियों को न सिर्फ उनकी मातृभूमि से धकिया दिया गया, बल्कि उनकी संपत्ति, धन–दौलत और स्त्रियों पर कब्जा और अत्याचार किया गया। कालांतर में यहूदियों ने अपने समाज के बीच विभाजन को समझा और एकता का दंड ऐसी कठोरता से पकड़ा, कि आज उन्होंने न सिर्फ अपना देश पुनः प्राप्त किया, बल्कि इसे मजबूती से बढ़ा भी रहा है। यह कुछ–कुछ ऐसा ही है, जैसा कश्मीर से हिंदुओं को निकाल कर मुस्लिमों ने सारे 'स्वर्ग भूमि' पर कब्जा कर 'जिहादी मजहबी' भूमि में बदल दिया था। क्या कुछ नहीं सहा था हिंदू परिवारों ने, महिलाओं, बच्चियों ने ! भय आज भी इतना है कि सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद हिंदु वहाँ रहना सुरक्षित नहीं मान रहा।

क्या तब किसी मुस्लिम नेता, धर्मगुरु ने कश्मीरी हिंदुओं पर अत्याचार करने वाले जिहादियों का विरोध किया था? नहीं। क्योंकि यह सब उनके मजहब के विस्तार को बढ़ाता है। लेकिन जब कहीं से कोई प्रबल प्रतिरोध होता है, तो ये लोग तुरंत पीड़ित बनने का ढोंग कर संवेदनशील लोगों को धोखा देते हैं। ऐसे में इनकी मानसिकता को समझ कर ही इनसे बचा जा सकता है। क्योंकि भारत में हमास, आईएसआईएस, कश्मीरी जिहादियों के समर्थन में खड़े होने वाले लोग भारत के लिए बहुत बड़ा खतरा हैं। ये वो 'टाइम बम' हैं, जो अपने समय आने पर फटने को तैयार हैं।

ऐसे में सरकार और समाज के सजग व जिम्मेदार लोगों को स्वयं और राष्ट्र रक्षा के लिए गंभीर कदम जल्द ही उठाने होंगे। क्योंकि भारत में विभाजनकारी राजनीति होती है और कुछ राजनेता अपने निहित स्वार्थ के लिए देश को बर्बाद करने से गुरेज नहीं करेंगे। इसलिए सही नेतृत्व भारत को मिलता रहे, इसकी चिंता और कर्मण्यता करते रहना ही 'हम भारत के लोगों' का नैतिक और धार्मिक कर्तव्य है।

yuvrajpallav21@gmail.com

भारत में भी तैयार है गाजापट्टी जैसा उन्माद फटने को

ललित गर्ग

समूची दुनियाँ मजहबी कट्टरता, अमानवीय अत्याचार एवं उन्मादी आतंकवाद के चलते विश्वयुद्ध के मुहाने पर खड़ी है। हमास के आतंकवादियों ने किस तरह की हैवानियत की थी, छोटे–छोटे बच्चों एवं महिलाओं के साथ घर में घुसकर हिंसा, अनाचार किया, गोली मारी, जिंदा जला दिया। पकड़े गये सैनिकों को बारूद में लपेट कर जीवित जला देना, अपने ही हिमायती लोगों को अपने लिए मानव ढाल बनने के लिए मजबूर करना, उन्हें युद्ध क्षेत्र में रोकना, जिससे अधिक से अधिक लोगों की जान जा सके, यह किसी युद्ध की स्थिति नहीं है, अपितु यह इस्लामी कट्टरवादी सोच है। यह सारी मानवता को चुनौती है, विश्व शांति को खतरा है, उसके लिए अस्तित्व रक्षा का प्रश्न है। अब सवाल ये है कि गाजा के आम लोगों का इसमें क्या कसूर? क्या हमास की दरिंदगी का बदला गाजा के आम लोगों के खून से चुकाया जाएगा? आखिर कब तक निर्दोष, मासूम एवं आमजन उन्माद एवं आतंक की भेंट चढ़ते रहेंगे? इस्लामी कट्टरता एवं उन्माद के काले दंश केवल गाजापट्टी में ही नहीं, भारत में भी कहर बरपाते रहे हैं, लम्बे समय से जम्मू– कश्मीर हो या हाल ही में मणिपुर –मेवात में हुई हिंसा, उन्माद एवं वहशियाना हरकतें चिन्ता का सबब बनती रही हैं।

इस्लामी आतंकवाद खतरनाक है, मानवता पर कुठाराघात है। इस तरह के आतंक से दुनियाँ को डराना एवं भयभीत करना मुख्य लक्ष्य है। हमास के आतंकवादियों ने जब इजरायल के मासूम नागरिकों पर बेरहमी से हमला किया तो, वे हथियारों के साथ–साथ कैमरों से भी लैस थे, अपनी वहशियाना हरकतों को कैमरे में कैद कर रहे थे। आज जब इसके सबूत सामने आए, तो साफ हो गया कि इरादा सिर्फ मारकाट मचाना नहीं था, इरादा सिर्फ इजरायल को नुकसान पहुँचाने का भी नहीं था, इरादा तो ये था कि ये हैवानियत दुनियाँ को दिखाई जाए, दुनियाँ को इस्लाम एवं उसकी आतंकी सोच के सामने झुकने को विवश करना तथा उनका इरादा इजरायल के आत्मसम्मान पर चोट पहुँचाना भी था।

इजरायल दुनियाँ को हमास के जुल्मों की तस्वीरें दिखाकर पूछ रहा है कि इस पर दुनियाँ के इस्लामिक देश खामोश क्यों हैं? जो आज इजरायल से जंग रोकने के लिए कह रहे हैं, उन्होंने हमास की अमानवीय कार्रवाई की निंदा क्यों नहीं की? अगर कैमरों पर सबूत न होते तो कुछ लोग शायद यह कह देते कि इजरायल की फौज और मोसाद ने खुद ही अपने लोगों को मरवाया, ताकि उन्हें हमास पर हमला करने का बहाना मिल सके। लेकिन इस बात के पुख्ता सबूत हैं और दावे भी कि हमास के आतंकवादियों ने मासूम और बेकसूर लोगों के साथ वहशियाना तरीके से जुल्म किया, हत्या की और आज भी अगवा किए गए लोगों को इंसानी ढाल बनाकर अपने आप को बचाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन फिलिस्तीन का समर्थन एवं मानवाधिकार की बातें करने वाले इन हरकतों को नजरअंदाज करने में लगे हैं। दुनियाँ के कई देशों में प्रदर्शन हुए हैं, लोग इजरायल पर दबाव

बनाना चाहते हैं, ताकि वो गाजा पर किए जा रहे हमलों को रोके।

इजरायल के कड़े रुख को देखते हुए अब हमारे देश में भी फिलिस्तीन और हमास के समर्थन में मुस्लिम संगठनों और मुस्लिम नेताओं ने प्रदर्शन शुरू कर दिए हैं। ये वे ही लोग एवं संगठन हैं, जो भारत में होने वाली आतंकवादी घटनाओं, उन्मादी सोच, हिंसा एवं पाकिस्तानी हरकतों का समर्थन करने से बाज नहीं आते। हमास के दहशतगर्दों ने महिलाओं के कपड़े उतारकर उन पर जुल्म करके, उनकी नुमाइश करते वक्त कैमरों के सामने अल्ला–हू–अकबर के नारे लगाए। गौर करने की बात यह भी है कि सऊदी अरब और यूनाइटेड अरब अमीरत में भी कोई विरोध प्रदर्शन के लिए सड़कों पर नहीं उतरा, लेकिन हमारे देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जिनके बारे में कुछ लोग कह रहे हैं–'बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना'। असदुद्दीन ओवैसी खुलकर इजरायल का विरोध कर रहे हैं और इजरायल का समर्थन करने के भारत सरकार के फैसले को गलत बता रहे हैं।

पिछले दिनों मेवात में बरपी इस्लामिक कट्टरता में भी गाजापट्टी जैसे ही दृश्य देखने को मिले। जिहादियों ने हिन्दुओं पर हमला करने की पहले से पूरी तैयारी कर रखी थी। यहाँ तक कि उन्होंने मन्दिर में फंसे हिन्दू महिलाओं, बच्चों एवं निर्दोषों को निकालने के लिए गुरुग्राम से आने वाले पुलिसकर्मियों पर भी हमले किए। पुलिस थाने को भी जला दिया गया, ताकि पुलिसकर्मी रक्षा एवं बचाव कार्य न कर सकें। उस समय मेवात मानों मिनी पाकिस्तान बन गया था। यह मेवात में अल्पसँख्यक हिन्दुओं का कब्रिस्तान बनाने का एक षडयंत्र एवं साजिश थी। मेवात के सैकड़ों गाँव हिन्दू–विहीन हो चुके हैं। मेवात के हालात आज के गाजा पट्टी जैसे ही बने हुए थे। भारत में ऐसी अनेक गाजापट्टी हैं, जहाँ इस्लामिक उन्माद चाहे जब फट सकता है। पूरे देश में इस्लामिक कट्टरता एवं जिहादी सोच के चलते मानवीय मूल्यों एवं साम्प्रदायिक सौहार्द का ह्रास हुआ है। हिंसा, आतंक, उन्माद पनपे हैं। इस्लामिक कट्टरता एवं उन्माद से जुड़ी समस्याओं ने नए सन्दर्भों में पंख फैलाए

हैं। मानवीय संबंधों के बीच एकता, अखण्डता, सहयोगिता, सह–अस्तित्व, प्रेम, आपसी सौहार्द, करुणा, अहिंसा एवं उदारता की पहचान घटी है।

कहना गलत न होगा कि हमास द्वारा इजरायल के निर्दोषों का नरसंहार भारत के कथित धर्मनिरपेक्ष तत्वों को दिखाई नहीं दिया, वे तथा सत्ता विरोधी गठबंधन से जुड़े दल मुस्लिम वोटों की संकीर्ण राजनीति के चलते आतंकियों के विरुद्ध एक भी शब्द बोलने की हिम्मत नहीं जुटा सके, आतंक के विरोध में बोलना उनकी मुस्लिम तुष्टिकरण नीति के खिलाफ जो ठहरा। विश्व भर में मानवाधिकारों की बात करने वाले भी आतंकी हमलों का विरोध न करके चुप्पी साध गए। यही नहीं आतंकियों के समर्थन में भारत भर में सत्ता के विरोध का वातावरण बनाया गया। अब मानवीय दृष्टिकोण से जब गाजा के सामान्य निर्दोष नागरिकों के लिए भारत ने राहत सामग्री भेजी है, तब हमास के समर्थन में जुलूस निकालने और तकरीर करने वाले तत्वों ने भारतीय सत्ता की तनिक भी सराहना नहीं की। भारत ने विश्वस्तर पर पीड़ित मानवता की सहायता करने में कभी कसर बाकी नहीं छोड़ी, फिर भी खास धर्म के अनुयायियों द्वारा भारत का विरोध करना यही सिद्ध करता है कि भले ही सबका साथ–सबका विकास की नीति का अनुपालन करते हुए सत्ता भेदभाव न करती हो, फिर भी कुछ तत्व ऐसे हैं, जिनके लिए धर्म के नाम पर आतंकियों का समर्थन सर्वोपरि है, राष्ट्र दोयम दर्जे पर ही है। यह चिंताजनक स्थिति है, जिस पर गंभीरता से चिंतन किया जाना नितांत आवश्यक है।

जब आतंकवादियों पर कार्रवाई होगी, तो मानवाधिकारों का मामला बन जाएगा और जब आतंकवादी निरीह नागरिकों की हत्याएँ–बलात्कार और बाकी जघन्यता करेंगे, तो वही रूदाली गिरोह या तो दूसरी ओर देखने लगेगा या महीन ढंग से काते गये शब्दों से उसके लिए ढाल पेश करने की कोशिश करेगा। यह ढाल शाब्दिक और आभासी होती है। भौतिक ढाल वे मनुष्य होते हैं, जो उनके नियंत्रण में होते हैं। लगता है ऐसे में फिलिस्तीनियों को सावधान रहना होगा, क्योंकि मानवाधिकारवादी रूदाली के तीसरे चरण के लिए फिर मानवों की कुर्बानी की आवश्यकता पड़ सकती है। जाहिर है यह कुर्बानी के मानव वे फिलिस्तीनी ही हो सकते हैं, जो या तो आतंकवादियों के हथियारों के वश में हैं या आतंकवादियों के दिखाए सपनों के वश में हैं। भारत में भी अक्सर ऐसा होता रहा है। सभ्यता संचार माध्यमों का निर्माण करती है, ताकि लोगों तक सूचनाएँ पहुँचाई जा सकें, पाशविकता उनका इस्तेमाल झूठ, नफरत, द्वेष एवं उन्माद फैलाने के लिए करती है, ताकि लोगों को निशाना बनाया जा सके। सभ्यता मानवीयता को पालती–पोसती है, पाशविकता उन मनुष्यों को मानव दीवार में इस्तेमाल करती है। जिनमें कट्टरता है, उन्माद है, जिन्होंने हाथों में बम एवं हथियार उठा लिये हैं, वह शांति एवं अमन का कोई तर्क नहीं सुनेगा एवं समझेगा। वे यह भी समझने को तैयार नहीं होंगे कि निर्दोष मृतकों की सूची लम्बी करने के परिणाम में घृणा की विरासत बनती है। उन्माद, जिहादी घृणा, नफरत, द्वेष और खून की विरासत कभी किसी को कुछ नहीं देती, किसी का भला नहीं करती।

lalitgarg11@gmail.com

हमास-इजराइल संघर्ष पर भारतीय दलों की विकृत राजनीति

मृत्युंजय दीक्षित

आतंकी संगठन हमास ने 7 अक्टूबर 2023 को इजराइल पर भीषण आतंकवादी हमला किया, जिसमें लगभग 1400 इजरायली नागरिकों को अपनी जान गंवानी पड़ी और लगभग 200 लोगों को आतंकी बंधक बनाकर ले गए। आतंकवादियों ने इस हमले में क्रूरता की सारी सीमाएँ लांघ दीं। बच्चों के सामने माता–पिता को मार देने, फिर बच्चों को जलाकर कोयले में बदल देने, जैसी जघन्य हरकतें कीं। इतने बड़े आतंकी हमले और अपने नागरिकों की इस दुर्दशा को देखकर इजराइल का शोक और क्रोध में डूबना स्वाभाविक था। इजराइल ने हमास को जड़ से उखाड़ फेंकने की घोषणा की और हमास के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। अब तक इजराइल हमास संघर्ष लगभग 30 दिन पूर्ण कर चुका है। हमास के चालांक आतंकी आम नागरिकों के पीछे छुपकर, उनको अपनी ढाल बना रहे हैं और हमास समर्थक संगठन और देश उन आम नागरिकों के नाम पर आतंकवादियों की तरफ से विक्टिम कार्ड खेल रहे हैं। इस प्रकरण में भारत ने आतंकवाद के प्रति शून्य सहनशीलता (जीरो टॉलरेंस) की नीति का पालन करते हुए इजराइल को समर्थन देने की घोषणा की और फिलिस्तीन और इजरायल के मध्य वार्ता के माध्यम से समस्या के स्थायी शांतिपूर्ण समाधान की पक्षधारिता की। संयुक्त राष्ट्र में जॉर्डन द्वारा लाए गए प्रस्ताव पर बोलते हुए भारत के प्रतिनिधि ने इस बात को स्पष्टता से रखा और प्रस्ताव में आतंकी हमले की निंदा न होने के कारण स्वयं को मतदान से अलग रखा। भारत के इस संतुलित व्यवहार की सभी जगह प्रशंसा हो रही है।

स्वाभाविक रूप से इतनी बड़ी अंतरराष्ट्रीय घटना का प्रभाव भारत की आतंरिक राजनीति में भी दिखाई पड़ रहा है और विरोधी दलों का आई.एन.डी.आई. गठबंधन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व भाजपा को हराने के लिए इसका राजनीतिक लाभ उठाने के प्रयास में है। बीते 7 अक्टूबर को जब हमास ने इजराइल पर 5 हजार मिसाइल और रॉकेट एक साथ दाग कर भीषण हमला बोला और इजरायल की महिलाओं, बच्चों सहित अन्य नागरिक पर बर्बर अत्याचार किये, तब भारत के किसी भी विरोधी दल के नेता ने इस आतंकी घटना की निंदा तक नहीं की। किंतु जैसे ही इजरायल की सेना ने हमास के आतंकवाद को समाप्त करने के लिए अपना अभियान प्रारम्भ किया, वैसे ही ये सोते से जाग गए और फिलिस्तीन के नाम पर अपने मुस्लिम वोट बैंक को साधने का प्रयास करने लगे ।

यह सभी लोग अच्छी तरह से जानते हैं कि हमास व हिजबुल्ला जैसे संगठन बहुत ही खतरनाक और क्रूर आतंकवादी संगठन हैं। लेकिन भारत में

क्योंकि अगले कुछ माह में पाँच राज्यों और उसके बाद लोकसभा चुनाव होने वाले हैं, इसलिए काँग्रेस सहित सभी विरोधी दल मुसलमानों के वोट पाने के लिए हमास जैसे आतंकवादी संगठन का साथ देते दिख रहे हैं। वोट बैंक को रिझाने के लिए ये कितना नीचे जा सकते हैं, इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि इजराइल पर हमला करने के बाद हमास के जिन आतंकवादियों ने एक महिला के नग्न शव की परेड निकाली, भारत में मुस्लिम वोट बैंक को प्रसन्न करने में जुटी "लड़की हूँ, लड़ सकती हूँ" का नारा देने वाली काँग्रेस की एक नेता फिलिस्तीन के पीछे छुपकर उसी हमास के समर्थन में खड़ी दिखाई दे रही हैं और इस कुकृत्य की निंदा करने के बजाय इजराइल द्वारा आत्मरक्षा के लिए गाजा पर की जा रही बमबारी की निंदा कर रही हैं। काँग्रेस नेता मणिशंकर अय्यर कुछ अन्य विरोधी दलों के नेताओं के साथ फिलीस्तीन के दूतावास तक पहुँच गये। बाटला हाउस एनकाउंटर पर आँसू बहाने वाली सोनियाँ गाँधी संयुक्त राष्ट्र में भारत के रुख का विरोध करते हुए लेख लिख रही हैं। बीच के कुछ वर्षों को छोड़ दें, तो 2013 तक भारत में काँग्रेस या उसके सहयोग वाली सरकारें ही रहीं, किंतु इन सरकारों ने एक बार भी पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बाँग्लादेश में अल्पसँख्यक हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों पर एक शब्द भी नहीं कहा और तो और भारत में भी कश्मीरी हिन्दुओं के पलायन, 1984 में सिखों के नर संहार जैसी घटनाएँ हुईं और आज ये वोट बैंक के लिए फिलिस्तीन के नाम पर हमास का साथ दे रहे हैं। मोहब्बत की दुकान के व्यापारी खुंखार हमास के साथ खड़े होकर आतंक बेच रहे हैं।

इन दलों की वर्तमान कार्यप्रणाली ने साफ कर दिया है कि 2013 के पूर्व जम्मू–कश्मीर का आतंकवाद और अलगाववाद, मुंबई जैसी बड़ी आतंकी घटनाओं सहित देश के विभिन्न हिस्सों में होने वाले बम धमाकों को काँग्रेस व इन मुस्लिम तुष्टिकरण करने वाले दलों का संरक्षण प्राप्त था और इन्हीं दलों की सरकारों की नीतियों के कारण दाऊद इब्राहीम जैसा आतंकवादी पाकिस्तान के संरक्षण में पल रहा है। आई.एन.डी.आई. गठबंधन में शामिल समाजवादी पार्टी का बस चलता तो, उत्तरप्रदेश में हुए आतंकवादी हमलों में शामिल सभी आतंकियों को मुसलमान होने के नाम पर छुड़वा देती, किंतु न्यायपालिका के कारण समाजवादियों का यह प्रयास विफल हो गया। आज समाजवादी पार्टी खुलकर हमास जैसे आतंकवादी संगठन का समर्थन कर रही है।

इजराइल के पलटवार के बाद से हर जुम्मे की नमाज के बाद फिलीस्तीन व हमास के समर्थन की आड़ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व उनकी नीतियों के खिलाफ जमकर प्रदर्शन हो रहे हैं। इन प्रदर्शनों में एआईएमआईएम नेता ओवैसी तथा काँग्रेस सहित सभी विपक्षी दल भारत के सामाजिक वातावरण को अशांत करने का या फिर देश को दंगों की आग में झोंकने का प्रयास करते दिखाई दे रहे हैं। सबसे घृणित व विकृत बात यह है कि विपक्षी दलों के प्रवक्ता दो हाथ आगे जाकर हमास को एक क्रांतिकारी संगठन बता रहे हैं।

इजराइल के पलटवार के बाद से हर जुम्मे की नमाज के बाद फिलीस्तीन व हमास के समर्थन की आड़ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व उनकी नीतियों के खिलाफ जमकर प्रदर्शन हो रहे हैं। इन प्रदर्शनों में एआईएमआईएम नेता ओवैसी तथा काँग्रेस सहित सभी विपक्षी दल भारत के सामाजिक वातावरण को अशांत करने का या फिर देश को दंगों की आग में झोंकने का प्रयास करते दिखाई दे रहे हैं। सबसे घृणित व विकृत बात यह है कि विपक्षी दलों के प्रवक्ता दो हाथ आगे जाकर हमास को एक क्रांतिकारी संगठन बता रहे हैं। टीवी चैनलों पर बहस के दौरान हमास को मानवाधिकार संगठन तक बताया जा रहा है। कुछ लोग यह भी कह रहे है कि फिलिस्तीन, गाजा और हमास के प्रति हमारी श्रद्धा है। मानसिक संतुलन खो चुके एक पार्टी के प्रवक्ता ने हमास के समर्थन में कहा कि वह बिल्कुल वैसा ही क्रांतिकारी कार्य कर रहा है, जैसा भारत के लोगों ने अँग्रेजों के विरुद्ध किया था और अँग्रेजों को मार भगाया था। अब हमास भी वही कर रहा है और वह दिन दूर नहीं जब हमास फिलीस्तीन को आजाद करा लेगा और इजराइल को नेस्तनाबूद कर देगा। इन दलों के प्रवक्ताओं को यह नहीं पता कि भारत के क्रांतिकारियों ने कभी किसी महिला के

साथ बलात्कार नहीं किया, नहीं उनके शव को वस्त्रहीन करके घुमाया, नहीं उनके गर्भ में पल रहे बच्चे को निकाल कर मार डाला, जबकि हमास के आतंकवादी यह सब कुछ बहुत ही भयावह ढंग से कर रहे हैं।

आज विपक्षी गठबंधन द्वारा हवा दिए जाने का ही परिणाम है कि हमास के एक आतंकवादी ने केरल में एक रैली को वर्चुअल माध्यम से संबोधित किया। केरल में एर्नाकुलम जिले में ईसाई समुदाय के एक सम्मेलन में हुए धमाकों में तीन लोगों की दुखद मौत हो गई और 51 लोग घायल हो गये। वहीं बिहार के पूर्णिया जिले में भी एक युवक द्वारा सोशल मीडिया पर कुछ आपत्तिजनक पोस्ट लिखे जाने के बाद हिंसा भड़क उठी, किंतु उसके बाद भी बिहार की नीतिश कुमार सरकार अल्पसँख्यक तुष्टिकरण पर उतारू है। बिहार सरकार ने हिंसक घटनाओं के बाद एकतरफा कार्यवाही की, जिसके बाद स्थानीय जनमानस क्रुद्ध है। झारखण्ड और हरियाणा से भी धमाकों की खबरें आईं।

मुस्लिम वोट बैंक के तुष्टीकरण में अंधे विपक्षी गठबंधन को समझना पड़ेगा कि इजराइल सदा भारत के साथ मजबूती से खड़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में जब भारत को आवश्यकता पड़ी इजराइल ने भारत का साथ दिया। अटल जी की सरकार के समय परमाणु परीक्षण होने पर विश्व के अनेक देशों ने भारत पर प्रतिबंध लगा दिये थे, तब भी इजराइल भारत के साथ खड़ा रहा। ऐसे मित्र देश पर आतंकी हमला हो और भारत उसके साथ न खड़ा हो, तो यह आत्मघाती होगा। इजराइल सरकार ने भारत पर हुए सभी आतंकवादी हमलों की कड़ी निंदा की है और जम्मू–कश्मीर पर हमेशा भारत का साथ दिया और यही कारण है कि आज भारत इजराइल के साथ खड़ा है। यह सरल सी बात आई. एन.डी.आई. गठबंधन को छोड़कर देश का हर नागरिक जानता है।

संयुक्त राष्ट्र में इजरायल–हमास संघर्ष विराम प्रस्ताव से दूरी बनाकर भारत ने एक सराहनीय कदम उठाया है, क्योंकि यह प्रस्ताव एकतरफा था और इसमें हमास की निंदा नहीं की गई थी, भारत का विपक्ष इस बात पर भी राजनीति कर रहा है। इजरायल–हमास संघर्ष में भारत की रणनीति एकदम स्पष्ट है और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अनेक मंचों से कई बार आतंकवाद के खिलाफ अपना मत स्पष्ट कर चुके हैं और भारत सरकार ने फिलिस्तीन पर भी अपनी नीति बता दी है, किंतु फिर भी एक सुनियोजित साजिश के तहत भ्रम फैलाया जा रहा है। केरल में हमास के पूर्व प्रमुख खालिद मशाल ने फिलीस्तीन समर्थक रैली को संबोधित किया था और उसने हिन्दुत्व और यहूदीवाद को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया था। यह वामपंथी सरकार के संरक्षण से ही संभव हो पाया है। सोनियाँ परिवार सहित हमास के समर्थन में हैं। समाजवादी तथा अन्य फिलिस्तीन के नाम पर आतंक को समर्थन दे रहे हैं। ये हिन्दुओं के चेतने का समय है !!

ymritvsk1973@gmail.com

वेदव्यास गुरुकुलम में सन्त मंथन कार्यक्रम

नई दिल्ली, 01 अक्टूबर। कर्नाटक के उडुपी पेजावर मठ के स्वामी विश्वप्रसन्नतीर्थ जी महाराज के आह्वान पर वेदव्यास गुरुकुलम दिल्ली में सन्त मंथन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस सन्त मंथन में उत्तर और दक्षिण भारत के 30 से ज्यादा सन्त एकत्रित हुए, जिन्होंने धर्मांतरण, गौ संरक्षण व परिवार प्रबोधन के विषयों पर चर्चा की। संत मंथन कार्यक्रम में विश्व हिंदू परिषद् के कार्याध्यक्ष श्री आलोक कुमार जी ने अपने संबोधन में सन्तों के मार्गदर्शन में देश को आगे बढ़ाने और हिंदू समाज को जागृत करने की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम में आए संतों ने तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन के पुत्र और राज्य सरकार के मंत्री उदयनिधि स्टालिन समेत कई विधर्मी राजनेताओं की ओर से बीते कुछ समय से सनातन धर्म के अपमान के प्रयास की एक स्वर में निंदा की। हरियाणा के मेवात–नूंह क्षेत्र में भी बीते दिनों ब्रज मंडल यात्रा में जिहादियों की ओर से श्रद्धालुओं पर हमले जैसी घटनाओं पर चिंता जाहिर की गई। साथ ही देश में लगातार विधर्मियों की ओर से लव जिहाद, जमीन जिहाद और धर्मान्तरण के कुत्सित प्रयासों को रोकने के लिए संत समाज को साथ लेकर हिंदू समाज को जागृत करने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

इस अवसर पर उपस्थित विहिप दिल्ली प्रान्त के अध्यक्ष श्री कपिल खन्ना ने सभी सन्तों को 22 जनवरी को अयोध्या में राम जन्मभूमि मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में आने का आमंत्रण दिया। कार्यक्रम में आनंद पीठाधीश्वर स्वामी बालकानन्द गिरी, राष्ट्रीय सन्त सेवा व गौ कल्याण परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दाती जी महाराज, कालका पीठाधीश्वर श्री सुरेंद्र नाथ अवधूत, श्री महामंडलेश्वर विवेकानन्द, श्री हरि ओम गिरी, श्री सर्वानन्द सरस्वती इत्यादि ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संयोजन विश्व हिंदू परिषद, दिल्ली प्रान्त के धर्माचार्य सम्पर्क आयाम ने किया।

vhpindraprastha@gmail.com

धर्म रक्षा ही राष्ट्र रक्षा है

वर्तमान विपरीत परिस्थितियों में हम सभी श्रद्धालु हिन्दुओं को अपना यह परम कर्तव्य समझना चाहिए कि यदि हमारा धर्म सुरक्षित है, तभी हमारा राष्ट्र 'भारत' सुरक्षित है। जबकि यह भी अत्यंत सुखद है कि अपने धर्म लाभ के लिए हम सदा समर्पित, तत्पर और जागरुक रहते हैं, जिसके लिए.........

- हम सब विभिन्न तीर्थ स्थलों व भव्य मंदिरों की नियमित यात्रा करके भगवान के प्रति भक्ति भाव से असीमित आनन्द प्राप्त करते हैं।
- विभिन्न धार्मिक त्योहारों पर जैसे श्री गणेश पूजा, माँ दुर्गा की पूजा, श्रीरामनवमी, जन्माष्टमी, महाशिवरात्रि, नवरात्रि, दशहरा, दीपावली व होली आदि पर अपनी–अपनी सामर्थ्य के अनुसार सभी भक्तगण विशेष आयोजनों द्वारा धर्म लाभ प्राप्त करते हैं।
- देश में हजारों–लाखों स्थानों पर रामलीलाओं का सजीव मंचन करके 10–15 दिनों तक निरंतर धार्मिक उत्सव के आयोजनों से भी सभी सनातनियों का उत्साहवर्धन होता है।
- समय–समय पर प्रमुख कथा व्यासों की कथाओं का भी आयोजन करके धार्मिक आनंद की अनुभूति होती है।
- उपरोक्त के अतिरिक्त पूरे विश्व में हिन्दुओं की धार्मिक आस्थाओं के और भी प्रमुख उत्सव होते हैं, जैसे कुम्भ पर्व, हिन्दू नववर्ष–विक्रमी सम्वत्, गंगास्नान एवं गोवर्धन पूजा आदि सभी पर्वों से हिन्दू भक्तजन अपनी धार्मिक मान्यताओं को बनाये रखे हुए हैं।

विनोद कुमार सर्वोदय

यह सत्य है कि उपरोक्त समस्त धार्मिक कार्यों को परिपूर्ण करने में हम सब मिलकर अरबों–खरबों रुपए व्यय करके भक्ति भाव में परम आनन्द व संतोष पाते हैं; परंतु विडम्बना यह है कि इन समस्त व्यवस्थाओं को भविष्य में भी सुचारु रुप से व्यावहारिक बनाए रखने की ओर से हम बिलकुल निश्चिन्त हैं।

जबकि इतिहास साक्षी है कि हमारे धर्म को पिछले लगभग 1400 वर्षों से अपमानित, पतित व नष्ट करने के षड़यंत्र रचे जाते रहे हैं। हमें भूलना नहीं चाहिए कि मुगलकालीन बर्बरता का इतिहास, जब करोड़ों हिन्दुओं का बलात् धर्मपरिवर्तन हुआ, उनकी हत्याएँ की गयीं, महिलाओं व युवतियों के अपहरण व बलात्कार हुए, हजारों मंदिरों व मठों को नष्ट किया गया, और तो और हमारे विश्व प्रसिद्ध विद्या के विशाल केन्द्रों को जला कर भस्म किया गया क्यों, क्योंकि इस्लामी राज्य के स्थापना की महत्वाकांक्षी जिहादी वृत्ति अभी भी यथावत मुसलमानों के मन–मस्तिष्क में गहरी बैठी हुई है? इसीलिए सन् 1947 में हमारे देश के टुकड़े करके पाकिस्तान के इस्लामी राज्य बनने के बाद भी शेष भारत को भी इस्लाम के झंडे के नीचे लाने के लिए मजहबी आतंकवाद (जिहादी जुनून) निरन्तर जारी है। हमें याद रखना चाहिए कि इस्लाम केवल अपने को ही सच्चा धर्म/मजहब मानता और कहता है, तभी तो विश्व के अन्य धर्म/मजहब पर अपना प्रभुत्व जमाना चाहता है। जिसके लिए कट्टरपंथी मुल्लाओं और मौलवियों आदि नासमझ मुसलमानों को जिहाद के नाम पर जन्नत में भोगवादी जीवन का लालच देकर गैर मुसलमानों के विरुद्ध आतंकवादी बनने के लिए उकसाते हैं।

निस्संदेह उन अधर्मी षडयंत्रकारियों की मनोदशा में कोई परिवर्तन न होने के कारण हमारे धर्म और देश पर संकट कम नहीं हुआ है। बल्कि आज के अतिशीघ्र संचारित होने वाली कार्यप्रणाली, अत्यधिक आधुनिक शस्त्रों एवं बढ़ती मुस्लिम जनसँख्या के कारण जिहाद रुपी संकट और अधिक बढ़ता जा रहा है। आज हमारा भारत ही नहीं पूरा विश्व जिहादी अमानवीय अत्याचारों के बढ़ते प्रकोप से घिर रहा है।

आज जब मानवता के ये शत्रु अपनी जिहादी महत्वाकांक्षाओं के वशीभूत अन्य धर्मावलंबियों को नष्ट करने के लिए धरती को लाल कर रहे हैं, अरबों डॉलर पानी की तरह बहा रहे हैं, तो ऐसे में क्या हम केवल अपनी धार्मिक

मान्यताओं व त्योहारों में ही सिमट कर अरबों–खरबों रुपया बहाते रहें? जरा सोचो, जब तक श्रद्धालु हिन्दू जीवित है, तब तक ही सनातन धर्म और भारत सुरक्षित है। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बाँग्लादेश और अब कश्मीर में भी हिन्दू लगभग शून्य हो चुका है और वहाँ स्थित अधिकांश तीर्थ स्थल व मंदिर ध्वस्त किये जा चुके हैं। ऐसे ध्वस्त किये गए अनेक स्थानों पर कुटिलतापूर्वक शौचालय, गोदाम, पशुघर आदि बनाये गए।

अतः यहाँ एक विशेष आग्रह है कि धार्मिक आस्थाओं को बनाये रखने व उसे जिहादियों से सुरक्षित रखने के लिए भी हमें तन, मन, धन से हिन्दू समाज की हर प्रकार की सहायता करनी होगी। अगर हिन्दू समाज अपने को सुरक्षित ससम्मान जीने के लिए सशक्त बनायेगा, तो ऐसा करने से उसे कोई रोक नहीं सकता? विचार करना होगा कि

अपने–अपने अस्तित्व की रक्षा में ही धर्म सुरक्षित है और उसी से राष्ट्र रक्षित है। यह मौलिक अधिकार हमारा संविधान भी हमें देता है। आज जबकि वैश्विक जिहाद ने हमारे धर्म को नष्ट करने की खुली चेतावनी दे रखी है, और उसके लिए कट्टरवादी मुस्लिम आतंकी संगठन अरबों डॉलर का बजट बनाए हुए हैं, तो हम भी कोई ऐसे सुरक्षा कोष का निर्माण क्यों नहीं करते, जिससे हम अपने धर्म की रक्षा करके अपने राष्ट्र को सुरक्षित करने का अपने सर्वोच्च कर्तव्य का पालन करें?

guptavinod038@gmail.com

महर्षि वाल्मीकि जयंती पर समरसता प्रवास

रविवार 28.10.2023 को वाल्मीकि जयंती का त्योहार था। इस अवसर पर दिल्ली के लाल किले से हर वर्ष एक विशाल शोभायात्रा निकलती है। दिल्ली के प्रमुख वाल्मीकि संगठन व मंदिर इसमें झांकियाँ लाते हैं और बड़ी सँख्या में भाग लेते हैं। यात्रा के मार्ग में जगह–जगह लोग इसका स्वागत करते हैं, फूल बरसाते हैं और खाने पीने के सामान के भंडारे लगाते हैं।

हर वर्ष की भांति, इस बार भी संघ परिवार के प्रमुख लोगों ने इसमें भाग लिया। विश्व हिन्दू परिषद की ओर से केंद्रीय कार्याध्यक्ष श्री आलोक कुमार भी लाल किले के मंच पर रहे और रथ में सजाई गई भगवान वाल्मीकि की प्रतिमा को प्रणाम कर यात्रा का शुभारंभ किया। इंद्रप्रस्थ विश्व हिंदु परिषद् के और विशेष तौर पर समरसता के कार्यकर्ताओं ने दिल्ली के विभिन्न वाल्मीकि मंदिरों में श्रद्धापूर्वक वाल्मीकि जयंती के समारोहों में सक्रिय सहभागिता की।

श्री आलोक कुमार 29 अक्टूबर 2023 को झारखंड के रामगढ़ और खूंटी जिलों में विहिप द्वारा आयोजित महर्षि वाल्मीकि जन्मोत्सव के कार्यक्रमों में शामिल हुए। वह हजारीबाग में भारतीय वाल्मीकि धर्म समाज द्वारा आयोजित जयंती कार्यक्रम में भी रहे। इसका आयोजन श्री विशाल वाल्मीकि ने किया। इसमें दिल्ली से विशेष तौर पर पूज्य संत विवेक नाथ जी पधारे। उनके द्वारा गाए गए भजनों ने एक गहरी श्रद्धा का भाव निर्माण किया।

इन उत्सवों में विशेष तौर पर इस पर बल दिया गया कि महर्षि वाल्मीकि किसी जाति विशेष के नहीं, बल्कि पूरे हिंदू समाज के लिए सम्माननीय महर्षि और भगवान हैं। वह आदिकवि, त्रिकाल द्रष्टा हैं। लव–कुश को उनकी शिक्षाओं से ही युद्ध कौशल, गायन और राजा के कर्तव्यों की शिक्षा मिली। यही कारण है कि श्री रामजन्मभूमि अयोध्या के परिसर में वाल्मीकि जी का सुन्दर मंदिर बनाना भी निश्चित हुआ है।

murari.shukla@gmail.com

चार दशक तक लड़ी राम मंदिर की लड़ाई

विनोद बंसल
प्रवक्ता, विहप

अयोध्या का नाम आते ही भगवान श्री राम की जन्मभूमि और उसके लिए सतत् संघर्ष करने वाले एक संगठन का नाम अनायास ही मानस पटल पर उभर कर आता है। सम्पूर्ण विश्व जानता है कि अयोध्या भगवान श्री राम की जन्मस्थली है, जिसकी स्थापना वैवस्वत मनु महाराज ने सरयू के तट पर की थी। जन्मभूमि स्थित मंदिर का जीर्णोद्धार कराते हुए आज से लगभग 2100 वर्ष पूर्व सम्राट विक्रमादित्य द्वारा काले कसौटी के पत्थर वाले 84 स्तंभों पर विशाल व भव्य मंदिर का निर्माण कराया गया, जिसे विदेशी आक्रांता बाबर के आदेश पर उसके सेनापति मीरबांकी द्वारा सन 1528 में ध्वस्त कर उसी के मलबे से मंदिर की नींव पर ही मस्जिदनुमा एक ढांचा बनाया गया।

मंदिर के ध्वंस का मुख्य कारण हिन्दू समाज की आस्था पर प्रहार कर बलपूर्वक धर्मांतरण करा मुसलमान बनाने की मानसिकता ही थी। मंदिर पर हुए इस प्रथम प्रहार को रोकने हेतु 15 दिनों तक लगातार संघर्ष चला। इन 15 दिनों में लगभग 1.76 लाख रामभक्तों ने बलिदान दिया, किन्तु अड़ियल मुगलिया सल्तनत ने आखिर तोपों से मंदिर को उड़ा दिया। 1528 से लेकर 1949 तक के कालखंड में भिन्न–भिन्न समयों में लगभग 76 युद्धों में लाखों रामभक्तों ने अपने जीवन का बलिदान दिया। कभी हम जीते तो कभी रुक गए। किन्तु भगवान की जन्मभूमि पर हमने कभी अपना दावा नहीं त्यागा। कभी कोई राजा लड़ा तो कभी कोई जागीरदार, कभी कोई संत लड़ा तो कभी कोई सामान्य नागरिक, कभी दर्शन पूजन निकट से किया, तो कभी बहुत दूर से ही, कभी वहाँ पर भगवान को मूर्ति रूप में विराजमान देखा, तो कभी मात्र उनकी जन्मभूमि के ही दर्शन मिले। कभी मंदिर में दर्शन मिले, तो कभी चबूतरे पर बने टाट के टेंट में। रामभक्तों के मन में वेदना तो रहती ही थी, किन्तु एक संतोष भी था कि चलो जैसा भी है, पावन जन्मभूमि दर्शन का सुभाग्य तो मिला, भव्य मंदिर भी कभी–न–कभी बनेगा। जो भी भक्त अयोध्या आता एक गहरी वेदना तथा एक संकल्प को मन में धारण करके जाता कि 'राम लला हम आएंगें, मंदिर भव्य बनाएंगे'।

हालांकि 1885 में भी एक निर्णय जन्मभूमि के पक्ष में तत्कालीन अंग्रेजी सरकार के काल में न्यायालय ने दिया था। किन्तु स्वतंत्र भारत में पहला वाद अयोध्या निवासी श्री गोपाल सिंह विशारद के द्वारा जनवरी 1950 में फैजाबाद के जिला न्यायालय में भगवान के दर्शन–पूजन की अनुमति हेतु दायर किया गया। इसे उच्च न्यायालय ने भी पुष्ट कर दिया। दूसरा वाद रामानंद संप्रदाय के साधु परमहंस श्री रामचन्द्र दास जी द्वारा 5 दिसम्बर 1950 को

दायर किया गया, जिसे अगस्त 1990 में वापस ले लिया गया। तीसरा श्रीपंच रामानंदी निर्मोही अखाड़े ने दिसंबर 1959 में तथा चौथा दिसंबर 1961 में सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड के बाद पंचम वाद भगवान श्रीराम लला विराजमान व स्थान श्रीराम जन्मभूमि के द्वारा जुलाई 1989 में दायर किया गया।

1949 से लगातार कानूनी कार्यवाही तो कछुए की चाल चलती रही, किन्तु मामले में असली मोड़ तब आया जब 1964 में जन्में विश्व हिन्दू परिषद ने अपनी तरुणाई के 19 वें वर्ष में प्रवेश किया। आंदोलन की कमान तो संभाली, किन्तु उसका श्रेय स्वयं ना लेकर किसी और को देता चला गया। श्रीराम जन्मभूमि के साथ काशी और मथुरा की मुक्ति हेतु 6 मार्च 1983 को उत्तरप्रदेश के मुजफ्फरनगर में हुए एक हिन्दू सम्मेलन में इस हेतु आह्वान करने वाले कोई और नहीं अपितु, देश के दो बार अंतरिम प्रधानमंत्री रहे श्री गुलजारीलाल नंदा तथा राज्य के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री व काँग्रेस के वरिष्ठ नेता श्री दाऊदयाल खन्ना थे। इस संबंध में इन नेताओं ने एक पत्र भी तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी को लिखा।

बस इसके बाद तो एक के बाद एक श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति के लिए आंदोलनों की एक श्रृंखला सी बन गई। हालांकि इन आंदोलनों की औपचारिक घोषणा से पूर्व विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) ने 1983 के दिसंबर माह में देशव्यापी एकात्मता यज्ञ की एक अनूठी योजना बनाई, जिसके अंतर्गत 'जाति–भाषा अनेक–सारा भारत एक' के राम भाव से प्रेरित होकर हरिद्वार से रामेश्वरम तथा गंगासागर से सोमनाथ तक सम्पूर्ण भारत को एक करने हेतु छोटी बड़ी लगभग एक सौ यात्राओं ने 50 हजार किमी से अधिक का मार्ग तय किया तथा 29 दिसंबर को इन सभी का संगम नागपुर में हुआ।

उपरोक्त हिन्दू सम्मेलन के आह्वान तथा एकात्मता यात्राओं के उत्साह ने जन्मभूमि की मुक्ति हेतु नव–ऊर्जा का संचार किया। परिणामतः 21 जुलाई 1984 को अयोध्या के भगवताचार्य आश्रम में 'श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति' का गठन हुआ। गोरक्ष

पीठाधीश्वर पूज्य महंत अवैद्यनाथ जी महाराज को इसका अध्यक्ष तथा श्री दाऊदयाल खन्ना जी को महामंत्री बनाया गया। राम और राष्ट्र के प्रति इनकी श्रद्धा ने उन्हें इस पावन कार्य से जोड़ दिया। इसके बाद तो एक के बाद एक कार्यक्रम, आंदोलन व संगठन बनते चले गए और राम भक्तों का कारवां भी बढ़ता चला गया। 1984 श्रीराम जानकी रथ यात्राएँ तथा उनकी सुरक्षा हेतु युवाओं की एक वाहिनी को बजरंग–दल का नाम देकर उसका गठन हुआ। जन्मभूमि की तालाबंदी के विरुद्ध अभियान तेज करने हेतु धर्मस्थल रक्षा समिति का गठन हुआ। उडुप्पी में 31 अक्तूबर 1985 को हुई धर्मसंसद के एक आह्वान तथा पूज्य महंत रामचन्द्र दास परमहंस द्वारा आत्म–बलिदान की धमकी के परिणाम स्वरूप 1 फरवरी 1986 को राम लला ताले से मुक्त हो गए।

देवोत्थान एकादशी यानि 9 नवंबर 1989 को देश के चार लाख गाँवों से पूजित शिलाओं के माध्यम से हरिजन बंधु श्री कामेश्वर चौपाल के हाथों पूज्य संतों की उपस्थिति में मंदिर का शिलान्यास हुआ। इसके निमित्त सम्पूर्ण देश में लगभग 7 हजार स्थानों पर यज्ञ किए गए। इसके बाद पूज्य संतों की केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक के निर्णयानुसार 30 अक्तूबर 1990 को कारसेवा की घोषणा ने राजनीतिक गलियारों में हल्ला मचा दिया। उसे रोकने के लिए केंद्र की वी.पी. सिंह सरकार तथा राज्य की मुलायम सिंह सरकार की लाख चेतावनियों, लाठी–डंडों व गोलियों को झेलते हुए कारसेवक लाखों की सँख्या में, किसी भी मार्ग से, किसी भी वेश में व किसी भी ढंग से 'राम लला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे' के मर्मस्पर्शी व गगन भेदी उद्घोषों के साथ, सिर पर केसरिया पटका बांधे अयोध्या पहुँच गए। दंभी शासक मुलायम सिंह ने कहा था कि 'परिंदा भी पर नहीं मार सकता'। उत्साही रामभक्तों ने गुंबद पर भगवा ध्वज भी पहरा दिया। आंदोलन के महा–नायक स्वर्गीय श्री अशोक सिंहल जी भी लहूलुहान हुए थे।

इसके बाद तो आडवाणी जी की रथ यात्रा हो, या वी.पी. सिंह, चंद्रशेखर व पी.वी. नरसिंहा राव के साथ वार्ताओं का दौर, 6 दिसंबर 1992 को बाबरी ढांचा ध्वंस का मामला हो, या सितंबर 2010 का माननीय उच्च न्यायालय का निर्णय, माननीय सर्वोच्च न्यायालय की सुनवाई में बाधा डालने के हिन्दू–द्रोही व काँग्रेसियों द्वारा न्यायालय पर किए गए अनवरत हमले हों, या 9 सितंबर 2019 का ऐतिहासिक सर्वसम्मत आदेश, एक के बाद एक बाधाएँ आती गईं, समाधान

निकलता गया और सम्पूर्ण विश्व टकटकी लगा कर देखता रहा।

मा. सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के साथ ही आंदोलनों और कानूनी दाव–पेचों का तो अंत हो गया, किन्तु वर्ष 2021 की 15 जनवरी से प्रारंभ हुए 44 दिवसीय श्री राम जन्मभूमि निधि समर्पण अभियान ने भी विश्व भर के जन जागरण अभियानों में एक नया कीर्तिमान बना डाला। कोविड संकट के विकराल दंश को झलने के बाद भी 'यह राम मंदिर मेरा है। रामजी के आदर्श व जीवन मूल्य मेरे हैं। रामराज्य की ओर हम सब मिलकर बढ़ेंगे। कितनी ही बाधाएँ आएँ, अविचल रहकर, कंटकाकीर्ण मार्ग को बुहारते हुए सम्पूर्ण हिन्दू समाज को साथ लेकर चलेंगे' ये भाव लेकर रामभक्त एक बार फिर जुट गए। देश के कुल 6.5 लाख में से 5.25 लाख गाँवों में 13 करोड़ से अधिक परिवारों के 65 करोड़ हिन्दुओं से सम्पर्क हेतु 10 लाख टोलियों में 40 लाख कार्यकर्ता जुटे थे। महामाहिम राष्ट्रपति महोदय से लेकर अधिकांश राज्यों के राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों, केंद्र, राज्यों के मंत्रियों, प्रतिष्ठित हस्तियों से लेकर समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े विशिष्ठ लोगों, पूज्य संतों के अतिरिक्त आर्थिक व सामाजिक रूप से देश के सभी सबल–निर्बल राम–भक्तों ने अपनी श्रद्धा–भक्ति व शक्ति से अधिक धन समर्पित किया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2020 में किए गए भूमि पूजन के दृश्य को भी हम सभी ने देखा। अब आगामी 22 जनवरी को राम लला अपने भव्य व दिव्य मूल गर्भगृह में पुनः विराजमान हो जाएंगे।

1983 से 2023 यानि पूरे चार दशक तक, विहिप की योजना, रचना, संचालन व संकट मोचक के रूप में इस आंदोलन में योगदान को तो सम्पूर्ण विश्व ने प्रत्यक्ष देखा, किन्तु उसने इस सब का श्रेय स्वयं ना लेकर सदैव पूज्य संतों व हिन्दू समाज को ही दिया। कभी मार्गदर्शक मण्डल तो कभी जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति, कभी मंदिर जीर्णोद्धार समिति तो कभी श्रीराम जन्मभूमि न्यास, कभी श्रीराम जन्म भूमि मुक्ति संघर्ष समिति तो अब श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास। सभी जगह पूज्य संतों का ना सिर्फ मार्ग–दर्शन लिया, अपितु उन्हीं को सदैव आगे रख कर श्रेय दिया। विहिप ने हर छोटी बड़ी सफलता का श्रेय सदैव पूज्य संतों व हिन्दू समाज को ही दिया और स्वयं आत्म–विलोकी या निर्लिप्त भाव से जन्मभूमि की सेवा तथा हिन्दू समाज के जागरण व संगठन के पुनीत कार्य में सक्रिय रही। उसका एक ही उद्देश्य रहा कि हिन्दू संगठित होगा, तो राष्ट्र भी शक्तिशाली बनेगा। हिन्दू समाज से ऊंच–नीच व भेद–भाव का अंत होगा तो समाज समरस व खुशहाल बनेगा। इसी दौरान अनेक अन्य संघर्षों के साथ विहिप ने श्री रामसेतु तथा अमरनाथ यात्रा की सुरक्षा हेतु भी बड़ी व निर्णायक लड़ाई लड़ीं। यह भाव वास्तव में विहिप ने हनुमान जी से सीखा। उन्होंने भगवान श्री राम के हर दुष्कर कार्य को सहज बनाया, किन्तु उसका श्रेय स्वयं श्री राम या अपने अन्य साथियों को ही दिया।

vinodbansal01@gmail.com

दुर्गावाहनी-मातृशक्ति द्वारा
शौर्य प्रदर्शन व शस्त्र पूजन

दुर्गा वाहिनी, मातृशक्ति द्वारा जिला स्तरीय शस्त्र पूजन शौर्य संचलन अशोक नगर जिले के पिपरई में निकाला गया, जिसमें प्रांत साप्ताहिक मिलन प्रमुख दुर्गा वाहिनी – आकांक्षा दुबे द्वारा बहनों से आवाहन किया गया कि धर्म की रक्षा के लिए बहनों को जागृत होना पड़ेगा। दुर्गा का रूप रखना पड़ेगा, तभी समाज की रक्षा हो पायेगी।

इस अवसर पर विभाग संयोजिका निकिता पटेल, मातृशक्ति विभाग संयोजिका सुधा श्रीवास्तव, मांडवी शर्मा, कमलेश दुबे, कार्यक्रम जिला संयोजिका नमिता यादव के नेतृत्व में रखा गया। बहनों द्वारा शोभायात्रा निकाली गई। बडी सँख्या में शौर्य का प्रदर्शन भी किया गया।

deepakmishravhp@gmail.com

डॉ. आनंद मोहन
सहयोगी - अग्रताबेन वघेल, आकांक्षा शुक्ला
सबरीन बशीर, आलोक मोहन

भारतीय रसोई परंपराओं में हल्दी और औषधीय लाभों के पीछे का विज्ञान

हल्दी पारंपरिक भारतीय चिकित्सा और सँस्कृति में एक सम्मानीय स्थान रखती है। इसका उपयोग हजारों साल पुराना है, प्राचीन वैदिक ग्रंथों में इसके उल्लेखनीय औषधीय गुणों के लिए संदर्भ मिलता है। प्राचीन वैदिक युग में, तीन सहस्राब्दियों में फैले, हल्दी का गहरा प्रतीकात्मक और औषधीय महत्व था। यह अनुष्ठानों, समारोहों और चिकित्सीय मिश्रणों में प्रमुखता से दिखाया गया था, जो अपने ज्वलंत रंग के साथ पवित्रता और शुभता को मूर्त रूप देता था। समकालीन समय में भी हल्दी आयुर्वेदिक चिकित्सा का एक महतवपूर्ण हिस्सा बना हुआ है, जो अपने बहुमुखी उपचार गुणों के लिए प्रसिद्ध है।

भारतीय व्यंजनों में हल्दी की केंद्रीय भूमिका

अपने औषधीय महत्व के अलावा, हल्दी भारतीय पाक परंपराओं की आधारशिला है। यह लगभग हर भारतीय रसोई में पाया जाने वाला एक सर्वव्यापी योजक है, खाना पकाने में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, हल्दी विभिन्न प्रकार के व्यंजनों में रंग और स्वाद दोनों जोड़ता है। इसका गर्म, सांसारिक स्वाद व्यंजनों की एक सरणी का पूरक है, और यह कढ़ी पाउडर और मसाला मिश्रणों में एक आवश्यक घटक है। अपने पाक कौशल से परे, हल्दी का उपयोग औपचारिक रूप से भी किया जाता है, जो अपनी शुभ उपस्थिति के साथ धार्मिक अनुष्ठानों और विवाह समारोहों की शोभा बढ़ाता है। इस प्रकार, एक पोषित औषधीय जड़ी–बूटी और एक सर्वोत्कृष्ट रसोई मसाले के रूप में हल्दी की दोहरी भूमिका भारत में इसके गहन साँस्कृतिक महत्व को रेखांकित करती है।

प्राकृतिक चिकित्सा प्रथाओं में हल्दी की भूमिका

हल्दी को घाव की देखभाल में अपनी भूमिका के लिए मूल्यवान माना जाता है, जहाँ इसे उपचार प्रक्रिया में सहायता और संक्रमण को रोकने के लिए कट और चोट पर उपयोग किया जाता है। कुछ परंपराओं में, इसका उपयोग पाचन संबंधी मुद्दों के लिए एक प्राकृतिक उपचार के रूप में किया जाता है, जहाँ इसे चाय के रूप में सेवन किया जाता है, या गर्म दूध के साथ मिलाया जाता है। इसके अलावा, हल्दी को त्वचा के स्वास्थ्य और रंग को बढ़ाने की क्षमता के लिए पोषित किया जाता है, जिसे अक्सर फेस मास्क और सौंदर्य उपचार में शामिल किया जाता है। पारंपरिक चिकित्सा में इसकी बहुमुखी प्रतिभा विभिन्न बीमारियों के लिए एक विश्वसनीय उपाय के रूप में हल्दी के गहन साँस्कृतिक महत्व और स्थायी लोकप्रियता को दर्शाती है।

आयुर्वेदिक चिकित्सा में हल्दी

आयुर्वेद में, चिकित्सा की पारंपरिक भारतीय प्रणाली, हल्दी को इसके शक्तिशाली सुजनरोधी, एंटीऑक्सिडेंट और जीवाणुरोधी गुणों के लिए सम्मानित किया जाता है। यह पाचन में सहायता करने, रक्त को शुद्ध करने और प्रतिरक्षा प्रणाली का समर्थन करने के लिए जाना जाता है। हल्दी दोषों में (वात, पित्त और कफ) सामंजस्य बनाकर आयुर्वेदिक उपचार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। माना जाता है कि इसका कड़वा और तीखा स्वाद कफ को शांत करता है, जबकि इसके गर्माहट भरे गुण अतिरिक्त वात को कम करने में मदद कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, हल्दी के शीतलन गुण बढ़े हुए पित्त को संतुलित करने का काम करते हैं, हल्दी शरीर के भीतर संतुलन बहाल करने में एक शक्तिशाली सहयोगी के रूप में उभरती है। दोषों पर इसका सूक्ष्म लेकिन गहरा प्रभाव आयुर्वेदिक चिकित्सा में हल्दी की समय –सम्मानित स्थिति का उदाहरण देता है, जहाँ इसे एक प्राकृतिक संतुलनकर्ता के रूप में माना जाता है, जो इष्टतम स्वास्थ्य और जीवन शक्ति को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, हल्दी का उपयोग बाहरी रूप से विभिन्न त्वचा रोगों और चोटों के उपचार के लिए किया जाता है। हल्दी के पीले रंग को कर्क्यूमिन नामक एक यौगिक द्वारा कार्यशील किया जाता है, जो इसके कई स्वास्थ्य लाभों के लिए जिम्मेदार

प्राथमिक सक्रिय घटक है। पाचन संबंधी रोगों को कम करने से लेकर घाव भरने में तेजी लाने तक, हल्दी के एंटीसेप्टिक और सुजनरोधी गुण पारंपरिक उपचारों में महत्व पाते रहे हैं।

हल्दी का औषधीय महत्व

प्राचीन प्रथाओं से परे, आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान में हल्दी एक शक्तिशाली एंटी–कैंसर एजेंट, न्यूरोप्रोटेक्टिव पदार्थ और कार्डियोवैस्कुलर स्वास्थ्य बढ़ाने के लिए, अपनी क्षमता को रेखांकित करता है। इसका सक्रिय यौगिक, कर्क्यूमिन, एक शक्तिशाली सुजनरोधी है, जो इसे गठिया और जोड़ों के दर्द जैसी स्थितियों को कम करने के लिए एक प्राकृतिक उपचार बनाता है। इसके एंटीऑक्सिडेंट गुण मुक्त कणों का मुकाबला करते हैं, समग्र सेलुलर स्वास्थ्य में योगदान करते हैं और संभावित रूप से पुरानी बीमारियों के जोखिम को कम करते हैं। इसके अतिरिक्त, हल्दी अपने जीवाणुरोधी और एंटीसेप्टिक गुणों के लिए जाना जाता है, जिससे यह घावों और चोटों के लिए एक प्रभावी सामयिक उपचार बन जाता है। पारंपरिक चिकित्सा में, हल्दी को पाचन में सहायता करने, यकृत को उत्तेजित करने और जठरांत्र संबंधी असुविधा को शांत करने के लिए नियोजित किया जाता है। इस प्रकार, वैदिक पवित्रता से वैज्ञानिक जाँच तक हल्दी की स्थायी यात्रा इसकी स्थायी प्रासंगिकता और सहस्राब्दियों में मानव कल्याण पर इसके गहरे प्रभाव को उजागर करती है।

विभिन्न प्रकार के शोध के अनुसार यह पाया गया है, कि हल्दी के वाष्पशील तेलों और कर्क्यूमिन के कारण शक्तिशाली सूजनरोधी गतिविधि प्रदर्शित करता है। कर्क्यूमिन, यदि मौखिक रूप से लिया जाता है, तो तीव्र सूजन की दवाइयाँ कोर्टिसोन या फेनिलबुटाजोन के बराबर ही सहायक पाया गया है। हल्दी के अर्क और हल्दी के आवश्यक तेल के कारण विभिन्न प्रकार के बैक्टीरिया, परजीवी और रोगजनक कवक की वृद्धि कम हो जाती है। यह साबित हुआ है कि हल्दी के साथ लिए गए पूरक आहार छोटे आंतों के घाव में कमी और वजन बढ़ाने में मदद करता है। एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि हल्दी के तेल ने डर्माटोफाइट्स और रोगजनक कवक को रोक दिया। करक्यूमिन का उपयोग करते समय पता चला कि ये मलेरिया रोगाणु और काला आजार रोगाणु के खिलाफ मध्यम गतिविधि दिखाता है। प्रायोगिक अध्ययन ने साबित कर दिया है कि मधुमेह में हल्दी की महत्वपूर्ण भूमिका है। हल्दी मधुमेह मेलेटस में जटिलताओं को कम करती है। अल्बिनो चूहों पर प्रयोगात्मक अध्ययन रक्त शर्करा और पॉलीओल मार्ग पर हल्दी की प्रभावशीलता को दर्शाता है, जिसमें पाया गया कि हल्दी और कर्क्यूमिन दोनों ने एलोक्सन रसायन द्वारा प्रेरित मधुमेह में रक्त शर्करा के स्तर को कम कर दिया।

हल्दी और इसके कर्क्यूमिन घटक के पानी और वसा में घुलनशील अर्क में व्यापक एंटीऑक्सिडेंट गतिविधि होती है, जो कि विटामिन सी और ई के बराबर

होती है। यह लिपिड या हीमोग्लोबिन को ऑक्सीकरण से बचा सकते हैं। कर्क्यूमिन में एंटीऑक्सिडेंट गुण होते हैं, इसलिए यह सक्रिय मैक्रोफेज द्वारा प्रतिक्रियाशील ऑक्सीजन प्रजातियों (आरओएस) जैसे हाइड्रोजन पेरोक्साइड (H2O2), सुपरऑक्साइड आयनों और नाइट्राइट रेडिकल पीढ़ी को काफी हद तक रोक सकता है। हल्दी ने मुख्य रूप से अपने एंटीऑक्सिडेंट गुणों के द्वारा हेपेटोप्रोटेक्टिव और किडनी सुरक्षात्मक विशेषताओं दोनों का प्रदर्शन किया, साथ ही साथ सूजनकारी साइटोकिन्स के गठन को कम करने की क्षमता भी दिखाई। जानवरों के अध्ययन से पता चला है कि कार्बन टेट्राक्लोराइड, गैलेक्टोसामाइन, एसिटामिनोफेन (पेरासिटामोल), और एस्परजिलस एफ्लाटॉक्सिन सहित विभिन्न प्रकार के हेपेटोटॉक्सिक क्रिया है, जिसमें हल्दी हेपेटोप्रोटेक्टिव प्रभाव प्रदर्शित करता है।

कई इन–विट्रो अध्ययनों ने बताया है कि कर्क्यूमिन तीन चरणों में कैंसर को नियंत्रित करने में सक्षम है। कर्क्यूमिन कोशिका प्रसार और ट्यूमर के विकास के निषेध को बढ़ाता है। कर्क्यूमिन को यूवी किरणों के म्यूटाजेनिक प्रेरण प्रभाव को रोकने के लिए भी उचित दिखाया गया है। हल्दी दर्शाती है कि यह अपने एंटीऑक्सिडेंट गुण के कारण कार्सिनोजेनिक मुक्त कणों को बेअसर करता है। हल्दी के एंटीऑक्सीडेंट गुण के कारण जो कि कार्डियोवैस्कुलर सिस्टम पर सुरक्षात्मक प्रभाव उत्पन्न करता है, इसमें कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड के स्तर को कम करना, लिपिड पेरोक्सीडेशन के लिए कम घनत्व वाले लिपोप्रोटीन (एलडीएल) की संवेदनशीलता को कम करना और प्लेटलेट एकत्रीकरण को रोकना शामिल है। हल्दी के घटक अर्थात् सोडियम करक्यूमिनेट और पी–टोलिमिथाइल–कार्बिनोल का जठरांत्र संबंधी मार्ग पर कई सुरक्षात्मक प्रभाव पड़ता है।

अंत में, हल्दी पारंपरिक चिकित्सा और साँस्कृतिक प्रथाओं के साथ गहराई से जुड़े समृद्ध इतिहास में एक बहुमुखी जड़ी–बूटी के रूप में खड़ा है। प्राचीन वैदिक ज्ञान में इसकी उत्पत्ति से लेकर आधुनिक वैज्ञानिक शोध में इसके एकीकरण तक, हल्दी ने अपने स्थायी महत्व का प्रदर्शन किया है। हल्दी को आयुर्वेदिक चिकित्सा, पाक परंपराओं या प्राकृतिक उपचार की आधारशिला के रूप में उपयोग किया जाता है, मानव कल्याण पर हल्दी का प्रभाव बहुत गहरा है। चल रहे शोध ने इसके लाभों के नए आयामों का अनावरण करना जारी रखा है, जो जटिल स्वास्थ्य चुनौतियों को संबोधित करने में इसकी क्षमता का संकेत देता है। हल्दी समग्र स्वास्थ्य का एक प्रकाश स्तंभ बनी हुई है, जो कल्याण की खोज में प्राचीन ज्ञान और अत्याधुनिक विज्ञान के बीच एक पुल प्रदान करती है और इसकी सुनहरी विरासत बनी हुई है, जो एक स्वस्थ, अधिक संतुलित भविष्य के मार्ग को प्रकाशित करती है।

'एक कदम आयुर्वेद की ओर'
'जामुन के अंग-अंग में औषधि है'

अगर जामुन की मोटी लकड़ी का टुकड़ा पानी की टंकी में रख दें, तो टंकी में शैवाल, हरी काई नहीं जमेगी और पानी सड़ेगा भी नहीं। जामुन की इस खूबी के कारण इसका इस्तेमाल नाव बनाने में बड़े पैमाने पर होता है। पहले के जमाने में गाँवों में जब कुएँ की खुदाई होती थी, तो उसकी तलहटी में जामुन की लकड़ी का इस्तेमाल किया जाता था, जिसे जमोट कहते हैं। दिल्ली की निजामुद्दीन बावड़ी का हाल ही में हुए जीर्णोद्धार से ज्ञात हुआ 700 सालों के बाद भी गाद या अन्य अवरोधों की वजह से यहाँ जल के स्तोत्र बंद नहीं हुए हैं।

स्वास्थ्य की दृष्टि से विटामिन सी और आयरन से भरपूर जामुन शरीर में न केवल हीमोग्लोबिन की मात्रा को बढ़ाता है, किन्तु पेट दर्द, डायबिटीज, गठिया, पेचिस, पाचन संबंधी कई अन्य समस्याओं को ठीक करने में अत्यंत उपयोगी है। एक रिसर्च के अनुसार, जामुन की पत्तियों में एंटी डायबिटिक गुण पाए जाते हैं, जो रक्त शुगर को नियंत्रित करती है। ऐसे में जामुन की पत्तियों से तैयार चाय का सेवन करने से डायबिटीज के मरीजों को काफी लाभ मिलेगा। सबसे पहले आप एक कप पानी लें। अब इस पानी को तपेली में डालकर अच्छे से उबाल लें। इसके बाद इसमें जामुन की कुछ पत्तियों को धो कर डाल दें। अगर आपके पास जामुन की पत्तियों का पाउडर है, तो आप इस पाउडर को 1 चम्मच पानी में डालकर उबाल सकते हैं। जब पानी अच्छे से उबल जाए, तो इसे कप में छान लें। अब इसमें आप शहद या फिर नींबू के रस की कुछ बूंदे मिक्स करके पी सकते हैं।

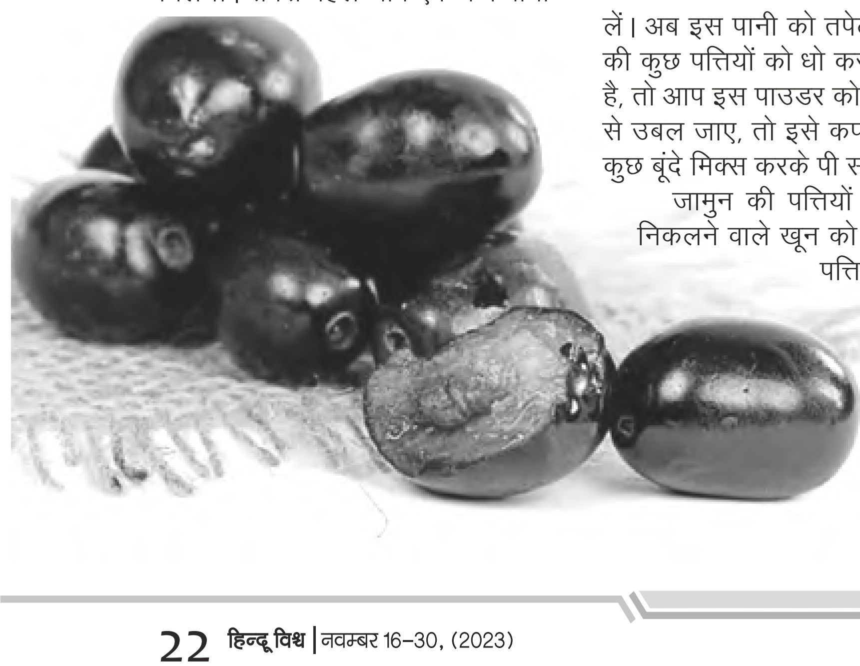

जामुन की पत्तियों में एंटी बैक्टीरियल गुण होते हैं. इसका सेवन मसूड़ों से निकलने वाले खून को रोकने में और संक्रमण को फैलने से रोकता है। जामुन की पत्तियों को सुखाकर टूथ पाउडर के रूप में प्रयोग कर सकते हैं. इसमें एस्ट्रिंजेंट गुण होते हैं, जो मुँह के छालों को ठीक करने में मदद करते हैं। मुँह के छालों में जामुन की छाल के काढ़ा का इस्तेमाल करने से फायदा मिलता है। जामुन में मौजूद आयरन खून को शुद्ध करने में मदद करता है। जामुन की लकड़ी न केवल एक अच्छी दातुन है, अपितु पानी चखने वाले (जलसूंघा) भी पानी सूंघने के लिए जामुन की लकड़ी का इस्तेमाल करते हैं।

श्री आलोक कुमार की उपस्थिति में मनाई गई महर्षि बाल्मिकी जयंती

'22 जनवरी को बिराजेंगे भव्य, दिव्य एवं अलौकिक मंदिर में भगवान पुरुषोत्तम श्रीरामलला, देश के 5.50 लाख मंदिरों में कार्यक्रम होंगे तथा 7 करोड़ से अधिक परिवार पूजन–अर्चन करेंगे : आलोक

रांची, 29 अक्टूबर, 2023। विश्व हिंदू परिषद ने रामगढ़, हजारीबाग एवं बुंडू के सूर्य मंदिर परिसर में महर्षि वाल्मीकि जयंती मनाई। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय कार्याध्यक्ष आलोक कुमार उपस्थित थे। इस अवसर पर आलोक कुमार ने 22 जनवरी को अयोध्या के नूतन श्रीराम मंदिर में हो रहे पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम लला के नूतन विग्रह के प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में सभी हिंदू जनमानस को आमंत्रित करते हुए कहा 22 जनवरी 2024 को झारखंड सहित देश के सभी प्रांतो में दीपोत्सव मनाया जाएगा। उन्होंने कहा की प्राण प्रतिष्ठा के दिन झारखंड में कोई भी घर ऐसा न हो, जिसमें दीपक न जले। उन्होंने कहा समस्त हिंदू जनमानस अपने–अपने क्षेत्र के मंदिरों में एकत्रित होकर कार्यक्रम के 24 घंटा पूर्व से धार्मिक अनुष्ठान करें एवं अयोध्या में हो रहे कार्यक्रमों का अपने–अपने मंदिरों में स्क्रीन अथवा टीवी के माध्यम से अवलोकन करें तथा अयोध्या में भगवान रामलला की आरती जिस समय हो, उस समय सभी जनमानस अपने–अपने मंदिर में ही खड़े होकर आरती करें। उन्होंने कहा कि त्रेतायुग में भगवान पुरुषोत्तम श्रीराम को 14 वर्ष के बाद अपना राज मिला था, परंतु इस कलयुग में श्रीराम लला 496 वर्षों बाद भव्य, दिव्य एवं अलौकिक भवन पर विराजमान होंगे। हम सभी इस क्षण को अपने आँखों से देखेंगे, यह हम सभी के लिए परम सौभाग्य का विषय होगा, ऐसे क्षण में त्रेतायुग की भांति इस युग में भी दूसरी दीपोत्सव कर भगवान पुरुषोत्तम श्रीराम जी का स्वागत करें। उन्होंने कहा इस निमित्त विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता घर–घर जाकर भगवान पुरुषोत्तम श्री रामजी का चित्र एवं पीले चावल देते हुए भगवान पुरुषोत्तम श्री रामजी के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में सम्मिलित होने का निमंत्रण देंगे। उन्होंने कहा इस कार्यक्रम के निमित्त देश के 5,50 लाख मंदिरों में कार्यक्रम होंगे, जिसमें 7 करोड़ से ज्यादा परिवार पूजन–अर्चन करेंगे। उन्होंने कहा श्री राम लला मंदिर परिसर में भगवान श्री राम दरबार के साथ–साथ महर्षि वाल्मीकि जी, गुरु वशिष्ठ, गुरु विश्वामित्र, श्री हनुमान जी, शबरी माता एवं जटायु का भी पूजन–दर्शन करेंगे।

भगवान वाल्मीकि आश्रम, दिल्ली के पूज्य स्वामी विवेकनाथ जी महाराज ने कहा भगवान वाल्मीकि रामायण महाग्रंथ की रचना भगवान पुरुषोत्तम राम के नीति, मर्यादा एवं आदर्श को मानव कल्याण के लिए किया। आज भगवान पुरुषोत्तम श्री राम को घर–घर तक ले जाने में भगवान वाल्मीकि का विशेष योगदान रहा है। उन्होंने कहा हिंदू समाज सदैव से समरस समाज रहा है, काल खंडों में जाति–पाती, ऊँच–नीच का भेदभाव देकर समाज को तोड़ने का प्रयास किया है, आज पुनः विश्व हिंदू परिषद समाज को समरस करने की दिशा में कार्य कर रहा है।

इस अवसर पर रामगढ़ रेलवे स्टेशन के समीप विश्व हिंदू परिषद–बजरंग दल, रामगढ़ जिला कार्यालय का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर, वैदिक मंत्रोच्चारण, हवन व गौपूजन के साथ पूरे विधि–विधान के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम में बच्चियों के द्वारा स्थानीय लोकनृत्य व गणेश वंदना के साथ अंग वस्त्र देकर अतिथियों का स्वागत किया गया।

drbirendra1966sahu@gmail.com

हिंदूवादियों ने दीपदान कर कारसेवकों को अर्पित की श्रद्धांजलि

मथुरा, 02 नवम्बर। हुतात्मा दिवस की 34वीं बरसी पर आज सायंकाल यमुना के पुण्य तीर्थ विश्राम घाट पर रामजन्मभूमि आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने वाले हिन्दू संगठनों से सम्बन्धित अनेक कार्यकर्ताओं ने तत्कालीन सपा सरकार द्वारा निहत्थे रामभक्तों पर की गई अंधाधुंध गोलीबारी में शहीद हुए ज्ञात–अज्ञात कारसेवकों को सामूहिक रूप से दीप–दान कर श्रद्धांजलि अर्पित कर यमुना मैया से शीघ्र श्रीकृष्ण जन्मभूमि को मुक्त करने की कामना की।

इस अवसर पर प्रमुख हिंदूवादी नेता गोपेश्वरनाथ चतुर्वेदी, ब्रजेंद्र नागर, प्रयाग नाथ चतुर्वेदी, विजय बहादुर सिंह, योगेश आवा, संजीव पाठक, डॉ. रमन टंडन, सरदार राजेन्द्र सिंह, संजय हरियाणा, गोकुलेश गौतम आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

mrvijaysingh1@gmail.com

हरिद्वार उत्तराखण्ड में वात्सल्य वाटिका का रजत जयंती समारोह

हरिद्वार (28 अक्तूबर 2023)। विश्व हिन्दू परिषद के सेवा प्रकल्प वात्सल्य वाटिका की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयंती समारोह आयोजित किया जा रहा है। समारोह के प्रथम दिन वात्सल्य वाटिका में विश्व हिन्दू परिषद के अखिल भारतीय सेवा प्रमुख तथा केंद्रीय मंत्री अजय पारीक, संयुक्त क्षेत्र सेवा प्रमुख राधेश्याम द्विवेदी, सोहन सिंह सोलंकी क्षेत्र संगठन मंत्री मेरठ क्षेत्र के साथ डा. सुरेंद्रानंद गिरी जी महाराज महामंडलेश्वर महानिर्वाणी पंचायती अखाड़ा, कनखल, हरिद्वार का आगमन हुआ। वात्सल्य वाटिका तथा कार्यक्रम के संबंध में जानकारी देते हुए वात्सल्य वाटिका के प्रबंधक प्रदीप मिश्र ने बताया कि वात्सल्य वाटिका स्थानीय स्तर व सुदूर पूर्वोत्तर राज्यों से संसाधन विहीन व अल्प संसाधन वाले परिवारों के बच्चों को भारतीय सँस्कृति के अनुरूप शिक्षित व सँस्कारवान बनाकर श्रेष्ठ नागरिक बनाने के लिए वचनबद्ध एक सेवा प्रकल्प है। वात्सल्य वाटिका से शिक्षा एवं अन्य सहगामी क्रियाकलापों में निपुण अनेक विद्यार्थी देश के विभिन्न सँस्थानों में अपनी निष्ठावान समर्पित सेवाएँ दे रहे हैं। वात्सल्य वाटिका परिवार अपनी स्थापना के पच्चीस वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर रजत जयन्ती समारोह आयोजित कर रहा है।

विश्व हिन्दू परिषद के अखिल भारतीय सेवा प्रमुख अजय पारीक ने वात्सल्य वाटिका द्वारा पालित तथा शिक्षित समाज के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित पूर्व छात्रों से मुलाकात के पश्चात कहा कि श्री ओमप्रकाशानंद तीर्थ गंगाश्री जनसेवा न्यास द्वारा संचालित वात्सल्य वाटिका का शुभारंभ अगस्त 1998 में हुआ था। केवल 15 बच्चों को साथ लेकर इस सेवा प्रकल्प की शुरूआत की गई थी। वर्तमान में सेवा प्रकल्प में 100 बच्चों से अधिक का लालन–पालन हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के साथ–साथ वात्सल्य वाटिका के शिक्षार्थियों ने फुटबॉल, टी.टी., कैरम, बाक्सिंग आदि खेलों में जिला, प्रदेश स्तर पर प्रतिभाग कर शीर्ष स्थान प्राप्त किए हैं। वात्सल्य वाटिका के शिक्षार्थियों की उपलब्धियों से अभिभूत एक सम्बन्धित लेख अमेरिका

की पत्रिका में भी प्रकाशित हुआ था। खेलों में पूर्वोत्तर के बच्चों द्वारा सम्पूर्ण उत्तर भारत में सेवा प्रकल्प का नाम रौशन किया है। सेवा सँस्थान में प्राचीन गुरूकुल परम्परा के अनुरूप बच्चे प्रातः जागरण करके शाखा लगाते हैं, घोषित दिनचर्या के अनुसार जलपान, विद्यालय, भोजन, खेल, संगीत एवं सायंकालीन संगीतमय आरती के साथ संगीतमय हनुमान चालीसा, वेदमंत्र, संघगीत, सामूहिक गीतों का गायन नित्य होता है।

विश्व हिन्दू परिषद के संयुक्त क्षेत्र सेवा प्रमुख राधेश्याम द्विवेदी ने कहा कि विश्व हिन्दू परिषद के सेवा प्रकल्प में स्व. ओंकार भावे की स्मृति में बच्चों एवं स्थानीय मरीजों के उपचार हेतु एक निशुल्क धर्मार्थ चिकित्सालय संचालित किया जाता हैं। इस सेवा प्रकल्प में पर्यावरण संरक्षण हेतू वृक्षारोपण के साथ क्षेत्र में जनोपयोगी अनेक जनजागरूकता अभियान, गौशाला संचालन, अन्न एवं वस्त्र वितरण, हरिद्वार की मलिन बस्ती के बच्चों का पालन–पोषण, विभिन्न सामाजिक सामूहिक कार्यक्रम जन्मदिन, विवाहदिन, विवाहयोग, संगीत के साथ कम्प्यूटर आदि के कार्य भी संपन्न कराए जाते हैं। स्थापना के समय से ही यहाँ समाज में समरसता हेतु मकर संक्रांति पर बड़ा कार्यक्रम होता है। यहाँ सभी राष्ट्रीय एवं सामाजिक पर्व बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। वात्सल्य वाटिका में युवाओं के रोजगार हेतू कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्र, छात्रों हेतु 200 सँख्या का छात्रावास, 10 बेड का अस्पताल स्थापित कराने का आगामी लक्ष्य है।

हरिद्वार, 29 अक्तूबर। रजत जयंती समारोह का शुभारंभ विश्व हिन्दू परिषद के केंद्रीय महामंत्री मिलिंद परांडे, साध्वी ऋतंम्भरा, पतंजलि योगपीठ ट्रस्ट के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण ने संयुक्त रूप से किया। वात्सल्य वाटिका रजत जयंती समारोह के अवसर पर सेवा प्रकल्प के कोषाध्यक्ष लीलाराम गुप्ता ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। वात्सल्य वाटिका ने आगामी समय में 25 नए सेवा प्रकल्प, सचल चिकित्सा वाहन, कौशल विकास केंद्र के माध्यम से क्षेत्र के विकास का संकल्प, सँस्कारशाला, सँस्कृत विद्यालय प्रारंभ करने का लक्ष्य लिया। वात्सल्य प्रसून स्मारिका का विमोचन मिलिंद परांडे, साध्वी ऋतंभरा, आचार्य बालकृष्ण, महामंडलेश्वर सुरेंद्रानंद ने संयुक्त रूप से किया।

समारोह में मिलिंद परांडे ने कहा कि समाज के उत्थान का कार्य करना सर्वोत्तम कार्य हैं, क्योंकि समाज के

उत्थान से देश का उत्थान होगा और भारत विश्व गुरु बनेगा। विश्व हिन्दू परिषद ने भी सम्पूर्ण समाज के उत्थान का संकल्प लिया है, जिसकी पूर्ति हेतु आज देशभर में 5000 से अधिक सेवा कार्य चल रहे हैं। वर्तमान समय में सेवा लेने से अधिक सेवा देने का मन होना चाहिए और प्रयास कर बनना भी चाहिए। भारत को 1000 वर्ष की राजनीतिक गुलामी भुगतनी पड़ी, जिस कारण आम जनमानस में राष्ट्रीय चरित्र का अभाव सा प्रतीत होता है। व्यक्ति का चरित्र राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत होना चाहिए। देश, धर्म और समाज के प्रति कुछ कर गुजरने का भाव प्रत्येक व्यक्ति के अंदर समाहित होना चाहिए। पूज्य संतों के मार्गदर्शन में श्रीराम मंदिर का निर्माण हो रहा है, इस जिम्मेदारी का निमित्त विश्व हिन्दू परिषद बना है। 22 जनवरी को अयोध्या में श्रीराम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के दिन देश के समस्त जनमानस अपने नजदीकी मंदिरों में सामूहिक रुप से उपस्थित होकर विजय महामंत्र का जाप करेंगे तथा अपने घरों में कम से कम 5 दीपक अवश्य जलाएंगे, यह आव्हान भी विश्व हिन्दू परिषद ने किया है। सम्पूर्ण देश के 5 लाख मंदिरों में हिन्दू समाज एकत्र आकर श्रीराम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का दर्शन करें। श्री राम की सामाजिक समरसता, तत्व ज्ञान को प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में धारण करनी चाहिए, केवट और शबरी प्रसंग को जीवन का आधार बनाना चाहिए। श्रीराम के चरित्र से प्रेरणा लेकर शक्ति साधना को दुष्ट दमन में उपयोग करना चाहिए, देश में अब कोई मंदिर तोड़ने का साहस नहीं कर सकता। विश्व हिन्दू परिषद समस्त हिन्दू समाज को अयोध्या आकर श्रीराम मंदिर के दर्शन का निमंत्रण देती है।

दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा ने वात्सल्य वाटिका को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि सेवा संकल्प की साधना का वात्सल्य वृक्ष आज फलित हो गया है, यहाँ से रोजगारोन्मुख पालन–पोषण सिंचित चरित्रवान नवयुवक आज समाज की सेवा के माध्यम से नेतृत्व करने को निकल रहे हैं। दीदी माँ ने मंच से 'मंदिर वहीं बनाएंगे' का काव्य पाठ किया। उन्होंने हिंदुत्व के पुरोधा और हिन्दू संगठन के पैरोकार अशोक सिंघल को याद करते हुए कहा कि उन्होंने देश के समस्त संतों के साथ हिन्दू समाज को एक मंच पर एकत्र कर श्रीराम मंदिर के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया था। अशोक सिंहल की प्रेरणा से ही विश्व हिन्दू परिषद का सेवा प्रकल्प वात्सल्य वाटिका की स्थापना हुई थी। आज 500 वर्षों के संघर्ष और बलिदान की हिन्दू समाज की साधना श्रीराम मंदिर के रुप में फलीभूत होने जा रही हैं। वात्सल्य वाटिका की तुलना दीदी माँ ने यशोदा माँ से करते हुए कहा कि माँ रचना नहीं रचनाधर्मी होती हैं। साध्वी ऋतम्भरा ने समस्त हिन्दू समाज को चरित्रवान संतान का आशीर्वाद दिया, जो देश, धर्म के कार्य में योगदान दे। श्रीराम मंदिर निर्माण समर्पण निधि अभियान में हिन्दू समाज आशा से प्रफुल्लित था कि भगवान के दर्शन करने का सौभाग्य अब प्राप्त होगा। इस अवसर पर आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि वात्सल्य वाटिका जैसे सेवा प्रकल्प समाज की सहयोगी चरित्र का वास्तविक दर्शन है। उन्होंने अशोक सिंहल के विराट व्यक्तित्व, समाज के लिए सेवा भाव, समर्पण, धर्म परायणता का दर्शन वात्सल्य वाटिका में दर्शित होता है। व्यक्ति को अपनी संतान को संपत्ति नहीं सँस्कार देने चाहिए। आज धर्म के नाम पर भारतीय सँस्कृति को दबाने और कुचलने के षडयंत्र नहीं चलने वाले हैं।

वात्सल्य वाटिका के रजत जयंती समारोह के अवसर पर महामंडलेश्वर सुरेंद्रानंद महाराज, स्वामी ललितानंद गिरी महाराज, साध्वी सत्यप्रिया, विश्व हिन्दू परिषद सेवा विभाग संयुक्त क्षेत्र संगठन मंत्री राधेश्याम तिवारी, क्षेत्र संगठन मंत्री सोहन सिंह सोलंकी, प्रान्त संगठन मंत्री अजय आर्य, प्रान्त अध्यक्ष विहिप रविदेव आनंद, साध्वी मैत्रेई गिरी महाराज, सुदर्शन अग्रवाल, राजेश कुमार, यू.सी. जैन, विधायक आदेश चौहान, सुशील चौहान, संजीव गुप्ता, नवीन मोहन, भारत गगन अग्रवाल आदि के साथ भारी जनमानस उपस्थित रहा।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

वाल्मीकि जयंती पर समरसता गोष्ठी

अशोकनगर। महर्षि वाल्मीकि जयंती विश्व हिंदू परिषद द्वारा मनाई गई। इस अवसर पर वाल्मीकि मंदिर में काव्य गोष्ठी रखी, गई साथ ही मंदिर में हवन किया गया, जिसमें समाज के प्रबुद्ध जन उपस्थित हुए। इस अवसर पर समरसता प्रमुख विकास जैन बल्ली ने बताया कि विश्व हिंदू परिषद समरसता के उद्देश्य से सभी समाज को हम सब हिंदू हैं के भाव से खड़ा करने के लिए प्रतिवर्ष वाल्मीकि जयंती मनाता है। इस अवसर पर प्रांत धर्म प्रसार प्रमुख डॉक्टर दीपक मिश्रा द्वारा वाल्मीकि जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया और कहा कि अगर रामायण आज समाज तक है, तो महर्षि वाल्मीकि

की रचना के आधार पर हम समाजजन भगवान राम की लीला रामायण से भगवान राम को जान पा रहे हैं। महर्षि वाल्मीकि जी का समाज हमेशा ऋणी रहेगा। हम सभी महर्षि वाल्मीकि जी को प्रणाम करते हैं, नमन करते हैं और सभी समाज से आवाहन करते हैं कि ऐसे महान संतों को हमेशा याद करते रहें। विभाग संयोजक वेदराम लोधी ने युवाओं से आवाहन किया कि महर्षि वाल्मीकि जी को अवश्य पढ़ें। इस अवसर पर बाल्मिकी समाज के अध्यक्ष राजेश बालू, सत्संग प्रमुख कंछेदी दांगी, सहसंयोजक दीपक जोशी आदि प्रमुख बाल्मिकी समाज के एवं विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

deepakmishravhp@gmail.com

माँ शबरी रामलीला महोत्सव ऋषिकेश में विहिप कार्याध्यक्ष आलोक कुमार

ऋषिकेश (उत्तराखण्ड)। विश्व हिंदू परिषद के अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आलोक कुमार उत्तराखण्ड की धर्मनगरी ऋषिकेश स्थित परमार्थ निकेतन में स्वामी चिदानन्द सरस्वती के सान्निध्य में माँ शबरी रामलीला महोत्सव में सम्मिलित हुए। माँ शबरी रामलीला महोत्सव के अवसर पर परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती ने कहा कि विजयदशमी का दिन हमें विजयश्री का संदेश देता है। असत्य पर सत्य की विजय, बुराई पर अच्छाई की विजय और आतंक पर शांति की स्थापना का संदेश देता है। विजयादशमी का उत्सव हम इसलिए मनाते हैं, क्योंकि प्रभु श्रीराम ने आज के दिन रावण पर विजय प्राप्त की थी, माँ दुर्गा ने महिषासुर का वध कर आतंक को समाप्त किया था और अर्जुन ने बुराई को समाप्त करने के लिए आज के ही दिन अपने अस्त्र–शस्त्र को पुनः प्राप्त किया था। ये तीनों अलग–अलग युग में घटे प्रसंग हमें यह प्रेरणा देते हैं कि मानवता की सेवा करना ही मानव जीवन का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि अमृतकाल में आगे आने वाले 25 वर्ष में भारत पूरे विश्व को एक नई दिशा देने जा रहा है। इसलिए अब हम सभी को महान भारत बनाने के लिए कार्य करना होगा।

परमार्थ निकेतन में आयोजित माँ शबरी रामलीला महोत्सव में विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आलोक कुमार ने कहा कि रामलीला में कुछ विलक्षणता और विशिष्टता है, इसलिए हम रामलीला बार–बार देखते हैं। प्रभु धरती पर इसलिए अवतरित होते हैं कि वह अपने जीवन मूल्यों से हमें शिक्षित कर सकें। अयोध्या में श्रीराम मंदिर का ही नहीं, बल्कि श्रीराम मंदिर के रूप में राष्ट्र मंदिर का भी निर्माण हो रहा है। श्रीराम मंदिर के 500 वर्षों के इतिहास को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि श्रीराम मंदिर हम सबका मंदिर है, जो हजारों–हजार वर्ष तक खड़ा रहेगा। यहाँ पाँच वर्ष के बालक के रूप में प्रभु श्रीराम की प्रतिमा विराजित की जाएगी। यह शंखनाद आगामी 22 जनवरी को होने जा रहा है। जिस दिन प्रभु मन्दिर में विराजित होंगे, सभी भारतवासी अपने आसपास के मन्दिरों में जाकर सीधे प्रभुजी की आरती में सहभाग अवश्य करें।

माँ शबरी रामलीला महोत्सव के अवसर पर परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी चिदानन्द सरस्वती ने विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार, हर्ष मल्होत्रा, दधीचि देहदान समिति के अध्यक्ष शक्ति बख्शी, विश्व मोहन को रुद्राक्ष का पौधा भेंट कर उपस्थित सभी अतिथियों का अभिनन्दन किया।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

उत्तराखण्ड में मातृशक्ति/दुर्गावाहिनी द्वारा शस्त्र पूजन कार्यक्रम

उत्तराखण्ड। विश्व हिंदू परिषद के सर्वाधिक महत्वपूर्ण आयाम मातृशक्ति, दुर्गावाहिनी ने शस्त्र पूजन कार्यक्रम के अंतर्गत सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में शस्त्र पूजन के भव्य कार्यक्रम आयोजित किए।

दुर्गावाहिनी के शस्त्र पूजन के विभिन्न कार्यक्रमों में सशक्त नारी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा गया कि नारी अबला नहीं सबला है। उत्तराखण्ड राज्य की वर्तमान चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में लव जिहाद, धर्मांतरण, लिव इन रिलेशनशिप जैसे गंभीर विषयों पर समाज में महिलाओं की विशेष भूमिका पर महत्वपूर्ण चर्चा की गई। कार्यक्रमों में विशेष रूप से बल दिया गया कि समाज में किसी भी रुप में उपस्थित कुप्रथाएँ, कुरीतियाँ और विधर्मियों की चुनौतियों का खुलकर विरोध प्रकट करना होगा, अन्यथा आने वाले समय में धर्म और सँस्कृति पर भयानक परिणाम सामने आयेंगे।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

ऋषिकेश (उत्तराखण्ड) में माँ शबरी रामलीला महोत्सव कार्यक्रम में
परमार्थ निकेतन के स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी के साथ उपस्थित विहिप कार्याध्यक्ष आलोक कुमार जी

१२०० से अधिक धर्माचार्यो की उपस्थिति में श्री काशी विश्वनाथ मंदिर में
बलिदानी कारसेवकों के श्रद्धांजली निमित्त महारूद्राभिषेक कार्यक्रम में उपस्थित विहिप महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

उत्तराखण्ड में दुर्गावाहिनी/मातृशक्ति द्वारा आयोजित शस्त्र पूजन कार्यक्रम में उपस्थित दुर्गावाहिनी, मातृशक्ति की कार्यकर्त्रियाँ

अशोकनगर जिले के पिपरई में दुर्गावाहनी, मातृशक्ति द्वारा शौर्य प्रदर्शन, शस्त्र पूजन के बाद पथ संचलन करती दुर्गावाहिनी की कार्यकर्त्रियाँ

अशोकनगर (मध्य प्रदेश) में बजरंग दल द्वारा शस्त्र पूजन कार्यक्रम में उपस्थित
विहिप-बजरंग दल के प्रांत के पदाधिकारी व कार्यकर्ता

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/21-23
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 13.11.2023
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

दिल्ली के लाल किले में वाल्मीकि जयंती के अवसर पर
संघ परिवार के पदाधिकारियों के साथ उपस्थित विहिप कार्याध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी

मुम्बई में धर्मप्रसार आयाम द्वारा आयोजित धर्मरक्षकों के
वर्ग में देशभर से पधारे कार्यकर्ताओं के साथ उपस्थित विहिप महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में वात्सल्य वाटिका के रजत जयंती वर्ष कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–81, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली–20 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी